शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 5 | उदयपुर बुधवार 15 मार्च 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

गणगौरें करोड़ों की और फूल पत्ती की

-डॉ. तुक्तक भानावत-

राजस्थानी लोकजीवन में गणगौर के त्यौहार का अपना अलग ठाठ है। लगभग सभी जातियों में गणगौर की सवारी निकलती है और उसकी सज्जा

तथा शृंगार भी जुदा-जुदा होता है। सामंतों और राजपरिवारों की गणगौरें बहुमूल्य सज्जा और आभूषणों से लकदक होती हैं। इनके आभूषण हीरे, जवाहरात के बने होते हैं और उतनी ही महंगी वेशभूषाएं होती हैं।

इन सबसे अनूठी और निराली गणगौर की एक ऐसी परंपरा भी राजस्थान में रही है जो किसी राजपरिवार और ठाकुर-सामंत की नहीं होकर श्रेष्ठी परिवार से जुड़ी हुई है। यह घटना बीकानेर के सेठ उदयमल ढड्ढ़ा से संबंधित है। सेठ उदयमल बीकानेर के तत्कालीन महाराजा गंगासिंह से घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे किंतु उनके कोई संतान नहीं थी।

पुत्र प्राप्ति से बैठा मेला :

महाराजा गंगासिंह और उनके परिवार की गणगौर पूजा के प्रति विशिष्ट आस्था थी। अत: उन्होंने सेठ उदयमल को सलाह दी कि वे भी गणगौर-पूजा की भक्तिभावनापूर्वक मनौती लें तो उनके संतान हो सकती है। सेठ उदयमल ने उनकी बात मानते हुए अपनी पत्नी को महाराजा के इस विचार से अवगत कराया। फलस्वरूप दोनों ने मनौती ली जिसका प्रभाव यह रहा कि अगले ही वर्ष चैत्र शुक्ला तृतीया को गणगौर के दिन ही उनको पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम चांदमल रखा गया।

इस खुशी में मनौती के अनुसार सेठ उदयमल ने बीकानेर के ढड्ढों के चौक स्थित ढड्ढों की हवेली में गणगौर के साथ पुत्र-रूप में भाइया का मेला प्रारंभ किया। तब से वहां गणगौर का यह मेला प्रतिवर्ष लगता आ रहा है। गणगौर के साथ पूजे जाने वाले भाइया को नानिया, बबुआ तथा लड्डू गोपाल जैसे नामों से भी संबोधित किया जाता है। यह मेला बैठा मेला है और गणगौर भी यहीं चौक में स्थिर रहती है।

सेठ उदयमल की इस गणगौर और इसके साथ वाला भाइया को जो आभूषण और पोशाक धारण कराए जाते हैं उसकी कीमत करोड़ों रूपयों की है। जब इसका प्रारंभ किया गया था तब सेठ उदयमल ने लगभग 40 करोड़ रूपये मूल्य के जेवराज पहनाए जो आज भी उसी रीति से पहनाए जाते हैं।

सेठ उदयमल की यह गणगौर नख से शिख तक सोने, हीरे, पन्ने, माणक,मोती जैसे कीमती जवाहरात से जड़ी हुई है। आभूषणों में सोने में जड़ाऊ बोर, मोती लगा टीका, बोर के नीचे खांचा जोड़ी, नाक में हीरे की मोती जड़ाऊ नथ, गले में हीरा पन्ना माणक मोती वाला कट्सरी गलपटिया, टेवटा-तिमणिया, टेवटे के नीचे चंदन हार, हाथ में मोतियों की बंगड़ी, गजरे, चूड़ियां और मटरिया, अंगुलियों में छल्ला तथा बींटी, कमर में हीरे मोती तथा सोने के जड़ाऊ कन्दोरे, पांव में नेवली, कड़ा, चूड़ियां जैसा पूरा बारह गहनों का सेट।

इसी तरह भाइया के आभूषणों में मोतियों की टोपी, कानों में ऊपर भंवरिये तथा नीचे मोती लगे लोंग, गले में पन्ना का कंठा, मोती, पन्ना, माणक की पोतरी, हाथों तथा पांवों में कड़े तथा बाजूबंद शोभित हैं। यह गणगौर पुलिस के कड़े पहरे में प्रदर्शित की जाती है। उल्लेखनीय पक्ष यह है कि इतनी कीमती गणगौर न उस समय कहीं देखने को मिली और न आज ही देखने को मिलती है।

राजस्थान में रहने वाले अधिकांश लोग सम्पन्न नहीं हैं। वे सामान्य जीवन जीकर भी अपने हाल में मस्त हैं और उनमें भी इस तरह के त्यौहार उतने ही उल्लास और मनबहलाव के साथ मनाए जाते हैं। गणगौर-ईसर उनमें भी पूजे जाते हैं किंतु वे इतने कीमती नहीं होकर प्रकृति द्वारा प्रदत्त फल-फूलों, पत्तों, डालियों आदि से बड़े मनोरम ढंग से सज्जित होते हैं।

गरासियों की गणगौरें :

ऐसी गणगौर में गरासियों की गणगौर बड़ी लोकप्रिय है। इस जाति का सबसे बड़ा मेला ही गणगौर का मेला है जो वैशाख कृष्णा पंचमी को आबू रोड़ के पास सियावा गांव में भरता है। इस मेले में दूर-दूर तक के गांवों, घाटियों, पहाड़ों, फलों तथा जंगलों से झुंड के झुंड स्त्री-पुरूष नाचते-गाते उमड़ पड़ते हैं। यह मेला पिछले 250 से अधिक वर्षों से भरता आ रहा है।

गरासिया बांस की खपच्चियों और छोटी-पतली डालियों की सहायता से गणगौर और ईसर बनाते हैं। मुंह की

जगह मुंडी यानी मुखौटा लगाते हैं। ईसर को धोती-कुर्ता व फैंटा पहनाया जाता है जबकि गणगौर को घाघरा, लुगड़ा, चोली पहनाई जाती है। इनको आम, नीम, महुआ, खजूर, पलाश आदि के पत्तों तथा कच्चे फलों की मालाओं से सजाया जाता है। आभूषण की जगह खजूरफल के रूप में कच्चे खजूरे, नीमफल के रूप में कच्ची निमोलियां तथा महुवा फलों की मालाएं बना कर पहनाई जाती हैं।

मेले में गरासिया युवक-युवतियां एक दूसरे के प्रेम में बंधते हैं और अपना प्रेम पक्का कर जीवनसाथी बन जाते हैं। तब कांच, कांगसी, बिंदी, रूमाल जैसी भेंट का आदान-प्रदान करते हैं और वहां से रफूचक्कर हो जाते हैं। प्रतिवर्ष ही ऐसे युवक-युवतियां भाग कर अपना वैवाहिक जीवन बसाते हैं। बाद में समाज द्वारा इन्हें मान्यता प्रदान की जाती है।

बणजारी बालाओं का मेला :

इसी तरह का एक मेला डॉ. महेन्द्र भानावत ने चित्तौड़ जिले के बणजारों का खेड़ा गांव में सन् 1990 में देखा। गांव के पास ही खेत के किनारे लड़कियों ने मिलकर पूरे दिन ईसर और गणगौर बनाए। घास फूस, पत्ते और टहनियों की सहायता से दिनभर होले-होले किंतु बड़ी ही आस्था से गणगौर-ईसर तैयार कर ईसर को अंगरखी, धोती पगड़ी और गणगौर को घाघरा, लुगड़ी, कांचली और चांदी आभूषणों से सजाया गया।

संध्या के प्रारंभ होते ही जुलूस रूप में उन्हें अपने गांव ले जाया गया। इस अवसर पर बालिकाओं द्वारा जो गीत गाया जा रहा था वह उनके भावुक-मन के भावी वैवाहिक जीवन के संकेतित करता प्रतिबिंबित हो रहा था-

ऐस री गणगौर आपां ऐली मेली करलां ए आवती गणगौर अपणो अंजल पाणी है

अर्थात् इस वर्ष की गणगौर तो अपन हिलमिल कर मौज मस्ती से मना लें किंतु अगले वर्ष की गणगौर जोग-संजोग पर है। शायद साथ न मना पाएं। गणगौर पूजने का यह मनोरथ ही उन्हें विवाहसूत्र में बांध देगा।

बालजन्म पर सुभागपड़ों का अंकन

-डॉ. कहानी भानावत-

सुभागपड़ा से तात्पर्य पट्ट अथवा पड़ के रूप में विवाहिता के प्रथम बालजन्म पर उसके पीहर की ओर से सुसराल सूचना के रूप में भेजे जाने वाले सौभाग्यसूचक सूचनापरक संदेश से है। यह पट्ट जोशी चितेरों अथवा बसी के खैरादी चित्रकारों द्वारा तैयार करवाया जाता है। पगल्या चित्र की प्रमुखता के साथ अन्य चित्रों की मनोहारी छवि लिए यह पड़ा शिशु जन्म के कल्याण, मंगल और शुभ शकुन की चित्रावणी देता है। किसी भी विवाहिता का प्रथम प्रसव उसके पीहर में ही होता है। अत: स्वाभाविक है कि बालजन्म की सूचना सबसे पहले उसके सुसराल वालों को भेजी जाय। यह सूचना नाई के साथ भेजी जाती है जिसे भेंट स्वरूप सरपाव के रूप में उसके पहनने की पूरी पोशाक और सवा रुपया तथा नारियल देने की परंपरा रही है।

सुभागपड़ा के चित्रों में सूर्य, चंद्र, कलश, आम्रपत्तों की माला, सातिया, दीपक, कमल पुष्प चित्रित किये मिलते हैं। इनके प्रतीक अर्थ हैं- नवजात शिशु विनायक जैसा मंगलकारी, मंगल कलश जैसा बहुसेवी, सातिया जैसा चतुर्दिक प्रिय, चांद जैसा चमकने वाला, सूर्य जैसा दमकने वाला, दीपक जैसा प्रकाशित होने वाला, तोता जैसा मृदुभाषी, मोर जैसा सर्वमोहक तथा फूलझाड़ जैसा ऋद्धि-समृद्धि मूलक हो।

यह उल्लेखनीय पक्ष है कि बालक जन्म के सुभागपड़े की बजाय बालिका जन्म के सुभागपड़े में झाड़, मोर, चीड़े तथा दीपक अधिक प्रकाशमान होते हैं। इससे लगता है कि प्रारंभ से ही बालिका जन्म को पारिवारिक ऋद्धि-सिद्धि तथा मंगल-मांगल्य की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

स्मृतियों के शिखर (28) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दयाराम : भवाई नृत्य की अंतर्राष्ट्रीय पहचान

भील कलाकार की तरह दयाराम ने भी 8 वर्ष की उम्र में गवरी नृत्य में नाचना शुरू किया। मादल और थाली के संयुक्त वादन से अंग-अंग में नृत्य की थिरकन स्वत: ही स्फूर्त हो उठती है। उसके लिए अगल से प्रशिक्षण लेने की आवश्यकता नहीं होती। गवरी भील जाति का समूह नृत्य है जो देवी गौरज्या की स्वीकृति पाकर रक्षाबंधन के बाद सवा माह तक अपने चौखले में गांव-दर-गांव, दिनभर रमा जाता है। दयाराम ने सबसे पहले अपने, कांकरोली के पास गुड़ली गांव में गवरी की घाई में जब गम्मत लेना प्रारंभ किया तो सबका मन मोह लिया। कलादल ही नहीं, दर्शक समुदाय भी उसे निहारता रहा। आगे जाकर वह बड़ा कलाकार बनेगा और बड़ा नाम करेगा, यह हर एक की जबान बोल रही थी।

धीरे-धीरे दयाराम गवरी के बणजारा, शंकर्‌या, कालू कीर, चपल्या मीणा, कानूड़ो जैसे स्वांग लाने लग गया। उन्हीं दिनों गांव में भवाई मंडली आई। मंडली के कलाकारों से मिलकर दयाराम उनके करतब सीख गया। इनमें सबसे अच्छा मटके लेकर नाचनेवाला नृत्य था जो उसके लिए अधिक आकर्षक बना। इस नृत्य में भवाई कलाकार जमीन पर लेटकर अपने पांवों से मटका उठाकर सिर पर रखता है। ऐसे मटके पर मटका रखते हुए वह तीन मटकों के सहारे बेलेंस बनाता हुआ मंच पर चौकड़ी भरता है। दयाराम पांवों से मटके उठाना तो नहीं सीख पाया किंतु सिर पर इडोणी के सहारे मटके पर मटका रखते हुए, चूड़ी उतार चार मटकों के सहारे नृत्य करने लग गया। इस नृत्य ने उसे जगह-जगह चर्चित कर दिया।

एकबार दयाराम का यह नृत्य निरंजननाथ आचार्य ने देखा। वे बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने एक चिट्ठी के साथ दयाराम को देवीलाल सामर के पास भेज दिया ताकि सामरजी उसे अपने कलादल में नौकरी दे सकें। कलामंडल प्रारंभ किये तब सामरजी को दो वर्ष हो चुके थे किंतु अपने प्रदर्शनों द्वारा उनकी ख्याति फैलती जारही थी।

सामरजी ने दयाराम का भवाई कलाकारों द्वारा सीखा मटका नृत्य देख उसे अपने कलादल में जगह देदी। दयाराम साढ़े छह फीट का जवान था। उसके अंग-अंग में लोच थी और अपनी कला के प्रति समर्पण भाव था जिसके कारण वह भवाई नाच को कई रंगों में थिरकाने लग गया। सामरजी की कला-दृष्टि ने उसे कई रूपों में संवारा। पोशाक, साजसज्जा, वाद्यवादन, पार्श्वगीतों का सरगम और भव्य प्रस्तुति के कारण सामरजी ने भवाई नृत्य का हुलिया ही बदल दिया। सिर के लम्बे बालों पर पंजाबी गिलास रखकर अपने अभ्यास से दयाराम ने इतनी होशियारी और सिद्धि प्राप्त कर ली कि वह ग्यारह मटके-मटकी तक रखने लग गया।

एक के ऊपर एक छोटे होते मटके-मटकियों की ऊंचाई और उतना ही ऊंचा कद दयाराम का, मगर कभी कोई मटकी टेढ़ी याकि बांकी नहीं हुई। देश विदेश में हजारों प्रदर्शनों के बावजूद कभी कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। न दयाराम गिरा न कोई मटका अथवा मटकी ही क्षतिग्रस्त हुई। खुले मंच पर जब वह दौड़ लगाता तो दर्शकों के दिल अवश्य दहलजाते कि अब गिरा, वो गिरा मगर वाहरे दयाराम! लगता जैसे भवाई को उसने समग्रत: ऐसा साध लिया कि स्वप्न में भी उसे कभी दुर्घटना की कोई संभावना नहीं रही।

दयाराम के साथ उसकी जोड़ी का कलाकार तोलाराम था जो हर समय उसके साथ रहा। तोलाराम को दो घड़े रखने के बाद उन पर और मटकी दर मटकी रखनी पड़ती। ऐसी स्थिति में वह स्टूल का सहारा लेता और चारों ओर घूमकर देखता कि कोई घड़ा टेढ़ा तो नहीं रखा गया है।

दयाराम जहां भवाई नृत्य में अतुलनीय, अद्वितीय था वहां तोलाराम कच्छीघोड़ी नचाने में उस्ताद था। तोलाराम ने बताया कि भवाई के मटकों को रंगीन बेलबूटों, फूलपत्तियों से अलंकृत किया जाता मगर उन्हें लेजाने में कई तरह से सावधानी रखी जाती। फिर मिट्‌टी के होने से वे वजनी भी होते तब दयाराम ने एल्युमिनियम के बर्तन काम में लेना प्रारंभ कर दिया जो अपेक्षाकृत काफी हल्के और लाने-लेजाने में अधिक सुविधाजनक रहे लेकिन विदेश यात्रा के दौरान उन्हें लेजाना भी भारी पड़ता अत: दयाराम को गिलास-तश्तरी का भवाई अधिक सुलभ, शोभावान और आकर्षक लगा।

तोलाराम ने बताया कि प्रदर्शन के दौरान वही उसके साथ रहता। उसी पर दयाराम का पूरा भरोसा और विश्वास था। पैंतीस-चालीस वर्षों में ऐसा एक भी दिन नहीं आया जब दयाराम के साथ तोलाराम नहीं रहा हो। अस्वस्थ रहते हुए भी तोलाराम ने दयाराम का साथ दिया और घोर बुखार या अन्य रोग से पीड़ित होते हुए भी दयाराम ने कभी अपना प्रदर्शन नहीं छोड़ा।

ऐसी अटूट लगन, समर्पण भाव और निष्ठा वाले कलाकार बहुत कम होते हैं। मैंने दयाराम को कभी, किसी क्षण कलामंडल में व्यर्थ बैठा नहीं देखा। वह हर समय इसी चिंतन में रहता कि उसके पास जो मंचीय कला है उसे कैसे और अधिक निखारा और संवारा जाय। अधिकाधिक खूबसूरती दी जाय। कैसे अधिकाधिक दर्शकों की वाहवाही लूटी जाय। अन्यों से कैसे भिन्न, अजूबा और चमत्कृत करदेने वाला उसका प्रदर्शन हो ताकि लोग उसे लंबे समय तक याद रख सकें। यही हुआ भी। वह भवाई में इतना अधिक रम गया कि लोग भूल बैठे कि वह भील कलाकार है बल्कि बहुत से लोग तो भवाई प्रदर्शन के कारण उसे भवाई ही समझ बैठे और यही उसकी पहचान बन गई। उसने भवाई को अपने में इतना रचापचा लिया कि वह उसका पर्याय ही होगया।

दयाराम के अलावा भवाई का विकल्प कोई अन्य नहीं हो पाया। जिस भवाई को भवाई जाति की महिलाएं देख नहीं सकती थीं और न कोई महिला ही भवाई करने के लिए सक्षम समझी जाती थी वही भवाई आज स्कूलों, कालेजों और अन्यत्र महिला कलाकारों में जबर्दस्त लोकप्रियता प्राप्त किये हुए है लेकिन दयाराम का मुकाबला कोई नहीं कर पाया। जब वह था तब भी और पिछले 20 वर्षों से, जब वह नहीं है तब भी। दयाराम ने तो पूरी भवाई जाति को ही अपने नृत्य में समेट कर उस नृत्य को ही भवाई कर दिया। भवाई के जितने प्रदर्शन दिये, उतना ही दयाराम ने उत्कर्ष पाया। देश का कोई कोना उसने नहीं छोड़ा जहां भवाई नहीं पहुंचा। भारतीय लोक कला मंडल की सर्वाधिक ख्याति

भी भवाई नृत्य के कारण हुई। ख्याति ही नहीं, सर्वाधिक धन और यश भी कलामंडल को भवाई ने दिलाया।

देश में ही नहीं, विदेश में भी भवाई की तूती कम नहीं बोली। स्वीडन, रूमानिया, मारिशस, स्पेन, बैल्जियम, डेनमार्क, जर्मनी, ईरान, ईराक, भूटान, नेपाल, हालैंड, सिक्किम, लंदन आदि जहां-जहां भी भवाई पहुंचा, उसे देख लोग दांतों तले ऊंगली ही दबाते रहे। प्रदर्शनोपरांत लोग आते और दयाराम के सिर पर अंगुलियां घुमाते कि ऐसा कौनसा जादू है जिसके कारण गिलास पर तश्तरी और तश्तरी पर गिलास चढ़ती जाने पर भी उनमें भरा पानी यथावत बना रहता है। अखबारों ने तो लिखा भी कि हिन्दुस्तान से ऐसा जादूगर आया है जो अपने नृत्य से सब पर जादू ढा रहा है। दयाराम की हर समय यही इच्छा बनी रहती कि उसकी अंतिम श्वांस तक वह मंच पर भवाई ही करता रहे।

लेकिन यह नहीं हो पाया और वह भी कुछ नहीं हो पाया जो इतने श्रेष्ठ, नामचीन कलाकार के लिए होना था। दयाराम को कोई ऐसा उल्लेखनीय सम्मान, पुरस्कार नहीं मिला जिसका वह पूर्णत: अधिकारी था। जब तक वह जिया, अभावग्रस्त ही बना रहा। वेतन शृंखला की दृष्टि से भी वह थर्डग्रेड में ही घसीट खाता रहा। क्या मिल पाता है कलाकारों को! नृत्य में जैसे सृष्टि का समग्र सौंदर्य उड़ेल देने पर भी मयूर को अन्ततोगत्वा अपने पांवों की जमीन खिसकती हुई मिलती है।

क्या हुआ मांड गीत गायिका अल्लाजिलाईबाई और गवरीदेवी का! खड़तालवादक सिद्दीक का! लोकसंगीत के नूरमोहम्मद लंगा का! चिड़ावी ख्यालों के सम्राट दूलिया राणा का! भजन गायिका सोहनदेवी का! मारवाड़ी ख्यालों के शिरोमणि उगमराज का! बहुरूपी कला के शिरोमणि परसराम का! तुर्रा ख्यालों के उस्ताद चैनराम का! रासधारी के गंगाराम का! कावड़ शिल्पी मांगीलाल का! कथाकौशल लक्ष्मीनारायण राव का और कठपुतली प्रदर्शन द्वारा विश्व का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करनेवाले दयाराम के साथी तोलाराम का! पद्मश्री प्राप्त करनेवाले उन कलाकारों से भी मैं मिला हूं। उनका दुखड़ा यही था कि वे पद्मश्री के कागजी सम्मान की बजाय प्रतिमाह कागज के चंद नोट ही प्राप्त करते रहते तो उनकी आजीविका को सहारा मिलता।

दयाराम कठपुतली नचाने का भी अव्वल कलाकार था। अपनी अंगुली की थिरकन से, मात्र तीन धागों से वह कठपुतली की जो भंगिमाएं निकालता, सौ-सौ धागों वाले विदेशी कलाकार भी वह कौशल नहीं दिखा पाते। दयाराम के साथ गए तोलाराम ने बताया कि सन् 1965 में रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह आयोजित किया गया।

इसमें भारत की ओर से कलामंडल के केवल दयाराम-तोलाराम ही दो ऐसे कठपुतलीकार थे जिन्होंने मात्र तेरह पुतलियों से मुगल दरबार नामक कठपुतली खेल का प्रदर्शन कर वहां आये विभिन्न 32 राष्ट्रों के उन कलाकारों को पीछे धकेल दिया जिनके कठपुतली दल में 25 से 50 तक कलाकार थे। पुतलियों के साथ रंगमंचीय सज्जा की सामग्री ढोनेवाले दो-दो ट्रक थे और एक-एक कठपुतली कई-कई धागों से अटी हुई थी। कलामंडल की कठपुतलियों में ऐसा क्या जादू था जिससे वे पूरे विश्व का प्रथम पुरस्कार पाने का हकदार बनीं!

दयाराम में और भी कई गुण थे। वह मिलनसार, हंसमुख और अपने दायित्व के प्रति निष्ठावान होने के साथ अन्य कलाकारों को भी अपने प्रदर्शनों में चमक लाने की सीख देता। कला के गुर बताता। संबंधों का निर्वाह करता। उसे कई कथा, किस्से, घटनाप्रसंग, कहावत, मुहावरे, लम्बे-लम्बे गाथा गीत कंठस्थ थे। कलामंडल में मेरा तथा दयाराम का साथ सन् 1958 से उसके निधनकाल तक रहा। कई प्रदर्शन यात्राओं में भी मैं उसके साथ रहा। शोध यात्राएं भी कीं खासकर उन छोटे-बड़े गांवों की जहां हमें दिन को जानकारी एकत्र करनी होती और रात को गांवों के कलाकारों का प्रदर्शन देखना होता।

दयाराम उन कलाकारों का प्रदर्शन देख उसमें घटत-बढ़त करने का प्रशिक्षण देता। उनके प्रदर्शनों को घंटों बैठ खरा बनाता। उदयपुर के पास बेदला गांव में सन् 1958 में राजस्थान के लोक कलाकारों के प्रशिक्षण शिविरों में भी दयाराम की भूमिका मुख्य रही। दो माह के चार शिविरों में राजस्थान के विविध अंचलों के, विविध विधाओं के निष्णात कलाकारों ने इन शिविरों का लाभ लिया। इस तरह का, पूरे देश में यह पहला आयोजन था।

इसी शिविर में जोधपुर के जीजोट गांव का नाथू भाट का कठपुतली दल आया जिसका हम लोगों ने बड़ी बारीकी से गंभीर अध्ययन किया। नाथू के साथ उसकी पत्नी ढोलक बजानेवाली और पुतलियों को संवाद देनेवाली टोलकी थी। दयाराम और तोलाराम ने नाथू से कठपुतली प्रदर्शन का तंत्र सीखा जिसके बल पर ही ये दोनों कलाकार विश्व विजयी हो सके।

कलाकारो में दयाराम दादाजी के नाम से सम्मानित था। सामरजी के साथ कला प्रदर्शन की महीने-डेढ़ महीने की यात्रा से लौटकर दयाराम संस्मरणों की पोटली खोल देता और भवाई प्रदर्शन की दर्शकों द्वारा की गई सराहनाओं के बखान से फूला नहीं समाता।

वह अक्सर कहा करता कि कला और कलाकार की परख तो विदेश में है। यहां तो भूंगड़े (चने) मूंफली की तरह कलाकार को फूंक से मसल दिया जाता है। जब तक उसमें कलाबाजी है तब तक हर कोई उसका कश निकालने को तत्पर रहता है। सारे देश में और विदेश में प्रदर्शन करने के उपरान्त भी यहां का कलाकार पैसे-पैसे के लिए मोहताज रहता है।

दयाराम हर जाति-बिरादरी का चहेता कलाकार था। प्रसंग चाहे रात्रि जागरण का हो या महिला संगीत का, बरात निकासी का हो या देवी-देवता के सम्मुख भजन परसादी का, पुत्र जन्मोत्सव का हो या फिर पंच सरपंच विधायक सांसद के सम्मान का, धर्मसभा का हो या मेले ठेले का, जाप तप का हो या यज्ञ अनुष्ठान का ; दयाराम का जहां भी पहुंचना होता, उस आयोजन में चार चांद लग जाते और लम्बे समय तक उसकी याददाश्ती बनी रहती। लोगों की जबान पर उसके चर्चे चलते रहते।

दयाराम कलाजीवी था। बातजीवी था। प्रदर्शनजीवी था। धर्म तथा अध्यात्मजीवी था। ग्राम्यजीवी था। परम्परानिष्ठ संस्कारजीवी था। हंसी मजाक के प्रदर्शनों में उसकी जो रंगत रहती, जो अदा रहती वह समूह में भी उसकी पहचान को वैशिष्ट्य दिये रहती। पणिहारी नृत्यनाटिका की सास और ग्रामीणजनों में वृद्ध का अभिनय जो दयाराम करता, वह किसी अन्य राम के वश का नहीं था। सच तो यह है कि दयाराम जैसे लोक कलाकार लाखों में एक, सदियों में एक होते हैं।

दयाराम दयाराम ही था अतुलनीय, अजूबा, अनुपम, अनोखा, अनहोना और अद्‌भुत! कांकरोली के पास अपने पैतृक गांव गुड़ली में 25 सितम्बर 1990 को दयाराम ने अंतिम स्वांस ली।

खोज-खबर

हकीकत सवारियों की

खुशनुमे प्रभात, 20 जमन 1972 को मैं राजपुरोहित देवनाथजी के उदयपुर स्थित निवास पर पहुंचा। पुरोहितजी मेवाड़ राजवंश के असल इतिहास हैं। पिछले 400 वर्षों से दरबार में इनका काम मास्टर ऑफ सेरेमनीज के मोरूसी के रूप में रहा है।

'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' नामक पुस्तक के संपादन के समय भी मैंने इनसे महाराणा जवानसिंहजी के काव्य-जीवन से संबंध में बहुत सारी सूचनाएं प्राप्त की थीं। महाराणा द्वारा प्रचलित विभिन्न प्रकार की पगड़ियों के संबंध में भी उन्होंने मुझे महत्वपूर्ण जानकारी दी थी। इस बार जब मैं विशेष वार-त्यौहार पर निकाली जानेवाली महाराणा की विशिष्ट सवारी के संबंध में पूछताछ करने गया तो उन्होंने मुझे संपूर्ण सवारी के संबंध में अधिकृत रूप से बड़ी रोचक जानकारी दी।

सवारी में सबसे आगे निसांण का हाथी रहता था। यह निसांण लाल कपड़े का झंडा होता था जिसमें सूर्य, चन्द्रमा और कटारी बने होते थे। विशेष अवसर पर जो निसांण रहता, वह जरी का होता और उसमें सुनहरे एवं रूपहरे सूरज, चांद और कटारी होते।

निसांण के हाथी के बाद दो पहिये की गाड़ी पर तोपखाना होता। तोपखाने के पीछे बैलों का रथ होता जिस पर लाल कपड़े का टप रहता। रथ के बाद आसमानी सेजगाड़ी होती। इसमें मोटे अच्छे गदेले बिछे रहते। यह भी बैलों से चलती। इसके बाद हाथी, फिर घड़सवारी के रूप में बोडीगार्ड और तब पल्टन रहती। इस पल्टन के आगे बैंड, मशक तथा पडगम नामक तीन प्रकार के बाजे वाले चलते थे।

भील कोर पल्टन :

महाराणा स्वरूपसिंहजी के शुरू अहद में दसरावे पर खैरवाड़े से सुपरिन्टेन्टेडेंट साहब 'मेवाड़ भील कोर' नामक पल्टन लेकर आये तब से सुपरडेंट व मेवाड़ प्रधान भील कोर नामक पल्टन साथ लेकर चलते। पल्टन के बाद आगे चलने वाले सरदार पासवान लोग चलते। राज्य के लवाजमे, जुलूस के हाथी-घोड़े तथा कोतल रहते। तखत एवं तामजाम होता। पहले तखत चार डंडो का होदे नुमा होता था। महाराणा स्वरूपसिंहजी ने उसमें कांच का काम की हुई कुर्सी लगवाई।

महाराणा सज्जनसिंह के समय संवत् 1940 में गणगौर की सवारी में महाराणा सज्जनसिंह तखत में, जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंहजी एवं किशनगढ़ के महाराज शादूलसिंहजी घोड़े पर तथा जोधपुर महाराजा के भाई प्रतापसिंहजी एवं भतीजे फतहसिंहजी सवारी में आगे चले।

पंचशब्दी बाजा :

तामजाम के बाद राजा के बाजे बजाने वाले होते। सबसे पुराना बाजा पंचशब्दी का था। यह बाजा महारावल बापाजी के समय से चला आ रहा कहा जाता है। इसमें लोहे की घंटी, बांक्या, नादशब्दी व शंख होता था। बयाना के युद्ध में महाराणा सांगा ने बाबर को लाल डेरे व अरबी बाजा तथा करनाला दिया था तब से सवारी में इनका भी प्रयोग प्रारंभ हुआ। लाल डेरे व लाल छत्र महाराणा मेवाड़ के अतिरिक्त कोई नहीं लगा सकता था। महाराणा जयसिंहजी के समय औरंगजेब से सुलह हुई तब बादशाह ने लाल छत्री को रोकने की कोशिश की परन्तु महाराणा ने इंकार कर दिया। तब से महाराणा जब कभी बाहर पधारते, बदी जलेबदार लाल छत्री लेकर जलेब में रहता था।

महाराणा जगतसिंहजी के समय दिल्ली बादशाही पतनावस्था में थी तब मेवाड़ के राजा एक जगह एकत्र हुए। लाल डेरा लगवाया गया। इनकी देखादेखी जोधपुर वालों ने भी लाल डेरा लगवाया। इसकी खबर दिल्ली पहुंची। वहां से ऐतराज उठा तब यह कहकर सफाई दी गई कि हजरत की खैरख्वाई के लिए ही यह डेरा लगवाया गया है। इसी प्रकार बादशाह जहांगीर के समय आमेर मिर्जा राजा मानसिंह ने आमेर के महलों में लाल पत्थर का दीवानखाना बनाया।

बादशाह को जब पता लगा तो आपत्ति उठाई गई तब स्पष्टीकरण दिया गया कि हजरत की पधरावणी करनी है अत: उन्हीं के लिए इसका निर्माण कराया गया है। इस पर बादशाह की ओर से हुकम हुआ कि हजरत को आने की फर्सत नहीं है अत: इस पर सफेदी करा दी जाय तब उस पर सफेद कलाई करा दी गई जो अभी तक विद्यमान है।

महाराणा जवानसिंह की देन :

रणकंकण का बाजा महाराणा जवानसिंहजी की देन है। अपनी गया यात्रा में महाराणा ने जब इसे उधर देखा तो इधर भी प्रारंभ किया। इसमें लचकदार बांसों पर छोटी-छोटी कटोरियां एवं घूघरे तथा रेशमी बादला के फूंदे और सिर पर भाले होते हैं। इन्हें हिलाने से उसमें से झमझम की ध्वनि निकलती है। एक झोराभाले नामक वाद्य भी रहता है।

इसमें बल्लम बर्छी के चारों ओर सुनहरी रूपहरी बादला बंधा रहता है। समय आने पर यह बर्छे का काम भी करता है। दरबार के दोनों तरफ भाले होते जिनके रेशमी बादले के फूंदे होते। दरबार के आगे छड़ीदार गोटेवाले होते जो सोने-चांदी की छड़ी एवं गोटे लेकर चलते। बंदूकदार दरबार के चलाने की बंदूकें लेकर चलते जो जरीन खोली में रहती। सवारी के घोड़े व हाथी के चारों तरफ अरदली के सिपाही रहते।

महाराणा स्वरूपसिंहजी ने 200 सिपाही के भर्ती किये थे। इनके लाल वर्दी होती। लंबे आगे रहते और गले में सोने के कंठे होते। सामान्य दिनों में ये लोग लाल साफा, घुटने तक का कोट तथा पाजामा पहने रहते। इनके हाथ में तलवार रहती। ये लोग विश्वासपात्र होते अत: इनके पहरे भी खास जगह रहते। दरबार के पीछे छत्र छांहगीर मेघाडंबर सूरजमखी तथा दो किरणाये रहते। छांहगीर शुतुर्मुर्ग के काले पंखों का बना होता जिसके बीच में स्वर्ण सूर्य रहता।

महाराणा स्वरूपसिंह की देन :

गणगौर पर दरबार नाव पर सवार होते तब रंगीन छतरी किनारे से सजी हुई रहती। दरबार जब तालाब में सैर करते तब नाव के ऊपर बगल में पाट्या होता जिस पर इज्जतदार पासवान बैठते। दरबार के दोनों ओर किरणाये खड़े रहते जो श्रीजी के चेहरे को सूर्य की किरण पड़ने से बचाते। जलेबदार छत्र मेघाडंबर और अडाणी छबे लेकर नाव के सामने खड़े रहते।

अडाणी खस की बनी सोने की डंडी पर गोल पंखानुमा होती जिसके झालर लगी रहती। यह एक प्रकार का पंखा था जो हाथी सवार होते तब भी काम आता। घोड़े सवार के वक्त झाड़प रहती। छबे खजूर की लंबी डालियों की बनी होती जिसके सुनहरी बादला के फूंदे लगे होते। यह मक्खी-मच्छर उड़ाने के काम आती। मेघाडंबर भी सोने का बना होता था।

सवारी में दरबार के पीछे महाराजकुमार घोड़े पर सवार रहते थे। उनके लिए चंवर के बजाय किनारी कोर के हस्ताड़े रहते थे। अमन होने के बाद महाराजकुमार दरबार के आगे, छड़ीदार घोटेवाले के आगे और रणकंकण बाजे के पीछे रहते थे। कुंवरजी के पीछे पाणेरे की गंगाजल की कावड़ व अरदली के सिपाही रहते। इनके पीछे घोड़े पर छत्र लेकर वांगट जागीरदार रहता। उसके पीछे खास वाड़ी में चलने वाले सरदार पासवान रहते।

इसके बाद नक्कारे की हथिनी होती जिस पर शहनाई और नगारखाना घुलता जाता था। हथिनी के दोनों बाजू झूलती खोली में नगाड़े होते थे। हथिनी के पीछे रिसाले के सवार होते और अंत ही अंत में सरदार, उमरावों की जमीयतें होतीं। दशहरा, गणगौर, शीतला सप्तमी, खड़ग थापना तथा भलका चौथ पर ये सवारियां आयोजित की जाती थीं। इनमें दशहरे की सवारी सबसे बड़ी सवारी होती थी।

सामरजी के साथ गणगौर की सवारी

उदयपुर में 1972 में देवीलाल सामर तथा मैं गणगौर का मेला देखने निकले। कोई 25-30 वर्ष बाद हमने यह मेला देखा। लगा स्वतंत्रता के बाद जैसे ये त्यौहार पराये हो गये। ठंडी मंडी गणगौरें। कहां गया वह जड़ाव, रंगरूप, रौनक और तेज? बूढ़े भगवानजी दर्जी हमारे साथ हैं। राणाजी की गणगौरें इन्होंने खूब देखीं हैं। देखीं क्या उनका जेवर तो स्वयं ये ही रखते थे। ये राणाजी के छाबदार` थे। गणगौर के लिए जवाहरात का लड़ालूम जेवर अब देखने को नहीं मिलता। कल का सोच जैसे आज सपन बन गया है।

भगवानजी बोलते गये, हुकम पांच दिन तक गणगौर की सवारी निकलती थी पांच रंगों में। पहले दिन का गुलाबी, दूसरे दिन का कसूमल, फिर हरा, फिर भोपालशाही और फिर पीला रंग। राणाजी को पाग भी इन्हीं रंगों की धारण कराई जाती। सरदार, उमराव भी इसी रंग में। यहां तक कि किश्ती भी इन्हीं रंगों में सजाई जाती। इस दिन का किश्ती की गीत- 'हेली नाव री असवारी सजन राण आवे छै'- आज जैसे गोत मना गया है। महलों की गणगौरमाता एकल रूप में ही होती। इसके साथ ईसरजी नहीं होते। इन्हें भोइणियां ऊंचाती। दोनों ओर दो चंवर ढोलने वाली होतीं। धावाइणियां तथा बोदणियां होतीं। ढोलणियां ढोल बजातीं। महलों में ही लहर आने पर कभीकभाक राणीजी भी पधार जातीं।

सवारी बहुत बड़ी, हाथी की भव्य सवारी होती। इतनी बड़ी कि महाराणा जब महलों में पधारना प्रारंभ करते तो आगेवान निसांण का हाथी गणगौर घाट पर होता। महाराणा को सूचना तोप द्वारा दी जाती। महाराणा गणगौर घाट पर पधार कर किश्ती में बिराजते। इस समय भी तोप चलाई जाती। किश्ती घूमघाम कर पुन: इसी घाट पर आती जहां रंडियां घूमर घालतीं। यहां से श्रीजी नाव में बिराजकर गोल महल के बंशीघाट पर पहुचते जहां नाव लंगर डालती। महाराणा यहां उतर कर महल पधार जाते जिसकी सूचना के लिए भी तोप दागी जाती। तोपखाना माछला मगरा पर उन दिनों जितनी चहलकदमी रहती थी, आज जैसे वह तोपखाना कोपखाना बना हुआ है।

-म. भा.

सत्य की राह आसान नहीं : मेवाड़

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा 5 मार्च को उदयपुर में आयोजित 35वें वार्षिक अलंकरण समारोह में देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में

उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने कहा कि यह सम्मान-अनुष्ठान सदियों से चले आ रहे कर्त्तव्य-बोध का पावन प्रतीक है। संसार में कोई मनुष्य ऐसा नहीं जिसकी कोई समस्या न हो और ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हल न हो। यदि हम सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं तो हमें कभी भी स्वयं को अकेला नहीं समझना चाहिए। समारोह अध्यक्ष राष्ट्रकवि बालकवि बैरागी ने बचपन से ही बच्चों को पढ़ने की ललक के साथ सच्चा इंसान बनाने पर जोर दिया।

समारोह में यूएसए के प्रो. सर एन्गस डेटन को कर्नल जेम्स टॉड, प्रवीण स्वामी को हल्दीघाटी, लोकप्रिय धारावाहिक तारक मेहता का उल्टा चश्मा के सूत्रधार शैलेष लोढ़ा को हकीम खाँ सूर, डॉ. आर वासुदेवन को महाराणा उदयसिंह, त्रिशुर की भारतीय नौवहन निगम की केप्टन राधिका मेनन को पन्नाधाय अलंकरण से सम्मानित किया गया। राज्य स्तरीय सम्मान में फाउण्डेशन द्वारा राज्य स्तर पर दिये जाने वाले अलंकरणों के अन्तर्गत यतीन्द्र मोहन प्रताप मिश्रा को महाराणा मेवाड़, कन्हैयालाल राव एवं पद्मश्री श्रीमती गुलाबो सपेरा को महर्षि हारीत राशि, प्रो. रमाकान्त पाण्डेय एवं डॉ. लता श्रीमाली को महाराणा कुम्भा, ललित शर्मा तथा डॉ. मलिका बोहरा को महाराणा सज्जनसिंह, गोपालस्वामी खेतांची एवं रा स्वरूप शर्मा को डागर घराना, गजल गायक उस्ताद अहमद हुसैन एवं उस्ताद मोहम्मद हुसैन को राणा पूंजा, श्रीमती मोती मीणा को अरावली सम्मान प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त 18 छात्रों को भामाशाह, 8 को राजसिंह, 48 को महाराणा फतहसिंह अलंकरण से सम्मानित किया गया।

इन पुरस्कारों के संदर्भ में डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि इनके प्रारंभकर्ता महाराणा भगवतसिंहजी गुणीजनों के कद्रदान, दूरद्रष्टा तथा साहित्य-साधक थे। एकबार उन्होंने डॉ. एच.आर. त्यागी तथा प्रो. देवकर्णसिंह के सामने जिक्र किया कि डॉ. महेन्द्र भानावत कौन हैं, उनका पता करो। मैं इन्हें हर समय पढ़ता रहता हूं। यदि ये गांव के, अपने इधर के ही हैं तो इन्हें महाराणा मेवाड़ द्वारा सम्मानित करने में खुशी होगी। दोनों प्रबुद्धचेताओं ने कहा कि भानावत हमारे अच्छे मित्रों में से हैं और वे कानोड़ गांव के रहनेवाले हैं किंतु जो पुरस्कार दिये जा रहे हैं, उनमें से एक भी पुरस्कार उनसे संबंधित नहीं है। वे लोककला-संस्कृति-साहित्य के क्षेत्र के हैं। इस पर महाराणा भगवतसिंहजी ने महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रारंभ किया और डॉ. भानावत को सम्मानित किया। यह बात 1984 की है। इसी वर्ष डॉ. धर्मवीर भारती, पं. जनार्दनराय नागर तथा अल्लाजिलाईबाई भी विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किये गये।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 मार्च 2017

सम्पादकीय

परम्परा की समझ

अधिकांश रूप में परम्परा को हम ढकोसला, रूढ़ि, अंधविश्वास आदि समझकर उसे व्यर्थ सिद्ध करने की कोशिश करते हैं लेकिन सभी परम्पराएं ऐसी नहीं हैं। इन्हें दकियानुसी कहकर कहीं हम गलती तो नहीं कर रहे हैं। बहुत कुछ अच्छा और श्रेष्ठ छोड़कर बदले में हम क्या अर्जित कर रहे हैं, इसे हड़बड़ाहट में नहीं, धैर्य शांति और समझपूर्वक सोचना होगा।

होली पर पूरे देश की, भारतीयता की पहचान देती परम्परा है। इसके पूरे देश के विभिन्न अंचलों, जातियों, वर्गों में कितने रंग-ढंग हैं, उनके पीछे छिपा भाव क्या है, कभी किसी ने शायद ही गंभीरतापूर्वक विचार किया होगा। राजस्थान में पहले हर ठिकाने में गणगौर का त्यौहार जिस ठाठ, ठसक, उल्लास और आनंद से मनाया जाता उसकी आज की पीढ़ी को शायद कल्पना भी नहीं। जन भागीदारी तो सबमें प्रमुखता से रहती ही थी। यह ठीक है कि स्वस्थ परम्पराओं में जो विकृतियां और अवांछनीय बदलाव आ गया है उसे दूर करें। सामाजिक मर्यादाओं का पालन करें। वैसे भी कोई चीज थोपने या कानून की जोर जबर्दस्ती से आम स्वीकृति नहीं पाती है। वह चलन में भी नहीं आती है।

मेवाड़ में महाराणा सज्जनसिंह ऐसे राणा हुए जिन्होंने दस वर्ष के अपने अल्पकाल में आमजन के हितार्थ बहुत सारे अच्छे कार्य किये। अब वे सारी चीजें राज के साथ चली गई पर महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के माध्यम से जो पुरस्कारों की बेल श्रीजी भगवतसिंह मेवाड़ ने प्रारंभ की, उसकी सौरभ आज पूरे विश्व में उजागर अंकित हुई है। तब इसका दायरा प्रारंभिक था किन्तु श्रीजी अरविंदसिंह मेवाड़ ने जो अकल्पनीय ऊंचाइयां दीं, उसके सभी साक्षी हैं।

इस बार समारोह की पूर्व संध्या पर उन्होंने एक और अच्छी परम्परा का सूत्रपात किया। महाराणा सज्जनसिंह ने जिस साहित्य सभा का शुभारंभ किया और उसके माध्यम से जो ख्यात-प्रख्यात कवि आये, आज भी उनकी प्रसिद्धि लोककंठों पर अमरता लिए है। श्रीजी अरविंदसिंह मेवाड़ ने लगभग सवा सौ वर्षों बाद उस साहित्य सभा को पुनर्जीवित किया, उसके लिए उन्हें हर-हर हार्दिक बधाई।

पत्र-पिटारी

डॉ. भानावत लोककला, लोकसाहित्य, लोकनृत्य, लोकवाद्य यानी लोक से जुड़ी हर एक विधा के पारंगत अधीर मनस्वी हैं। उनका लेखन ऐसा उम्दा दस्तावेज है कि इन्हें सुरक्षित कर पुस्तकाकार प्रकाशित करने की महत्ती आवश्यकता है जिससे कि ये काल कवलित होने से बच सकें। लोक की ये थातियां यदि लिखित दस्तावेजों पर नहीं उतरतीं तो कई बार उनके लुप्त होने का डर हो जाता है और कई बार लुप्त हो भी जाती हैं।

-ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल, जयपुर

सुजी के साथ डॉ. भानावत तथा रंजना

अमेरिका के मोन्टाना की रहनेवाली सुजी मिलर ने 7 मार्च को डॉ. महेन्द्र भानावत से उनके निवास पर भेंट की। उन्होंने बताया कि उदयपुर में सुजी छह वर्ष बाद आई। यों इससे पूर्व भी वह आठ-दस बार आ चुकी है। सुजी को लोककला संस्कृति के प्रति बड़ा लगाव है। पीछोला किनारे गणगौर घाट, लाल घाट बस्ती से

जुड़े पुराने हवेली- होटलों से वह बड़ी मुग्ध है। मुख्यत: हेंडीक्राफ्ट उसका प्रिय विषय है। मोन्टाना में भी हाथ की छपाई वाले विविध प्रिंट के कपड़ों का उसका बिजनेस है। 78 वर्षीय सुजी में कोई परिवर्तन नहीं लगा। वही स्फूर्ति, हंसी ठट्ठा, साइकिल की सवारी और मैत्री संपर्क। सुजी ने बताया कि पुरानी बस्तीवाला उदयपुर तो वैसा ही है पर बाहर बड़ी भीड़भाड़ चिल्लपों और प्रदूषित वातावरण है। इस बार डॉ. भानावत के साथ बहू रंजना से भेंट कर सुजी अधिक प्रसन्न हुई और शब्द रंजन की संपादिका के रूप में गले मिली।

अनूठे देव ईलोजी

राजस्थान के कई गांवों, कस्बों और शहरों में ईलोजी की ईंट-पत्थर से बनी प्लस्तर की हुई विशाल प्रतिमा देखने को मिल जायेगी। राजशी वेश-व्यक्तित्व के धनी ये अद्‌भुत देवता अपने विशाल एवं भव्य शाही ठाठ में खड़े-पंजे ऊंचे आसन पर बैठ हुए मिलेंगे।

ईलोजी का भरा हुआ चेहरा, हष्टपुष्ट शरीर, बांकी तनी मूछें, कानों में कुण्डल, गले में हार, भुजाओं पर बाजूबंद, कलाइयों में कंगन तथा भांति-भांति के रंगों की विविध कोराई में जो वैशिष्ट्य और शाही रूप परिलक्षित होता है, उससे राह चलता कोई भी आकर्षित हुए बिना नहीं रहता। जहां इनका कमर के ऊपर का सारा तन इतना सजाधजा और वस्त्राभूषणों से युक्त रंगावलियों में प्रदर्शित किया होता है वहां नीचे का भाग खुली नग्नता को दर्शाकर एक अजीब माहौल खड़ा कर देता है।

होली का यह देवता कहीं-कहीं सचमुच के वस्त्राभूषणों से सजाया जाता है। अच्छे वेश कीमती वस्त्र पहनाये जाते हैं। पाग में तुर्रे, कलंगी, मोड़ लगाये जाते हैं। सोने के कीमती आभूषण तथा असली मोतियों के हार तक पहनाये जाते हैं। हाथ में नारियल रख दिया जाता है। कथा किंवदंतियों में ये ईलोजी तो स्वयं कुंवारे हैं पर निपूती औरतों को पुत्र प्रदान करने वाले देव हैं इसीलिए इनके लिंग के स्थान पर बने विशाल छेद में ठूंसे मोटे बड़े डंडे को लिंग के रूप में बांझ औरतें अपनी योनि से छुवा कर पुत्र प्राप्ति का वरदान पाती हैं। राजस्थान में ऐसी कई औरतें मिलेंगी जिनके ईलोजी की कृपा से संतानें हुई हैं।

पुराणों में ईलोजी के एक आख्यान के अनुसार सम्राट हिरण्यकश्यप बड़े प्रतापी और प्रभावी सम्राट थे जिनके

होली नाम की इकलौती बहिन थी। हिरण्यकश्यप के प्रहलाद नामक पुत्र था जो बचपन से बड़ा धार्मिक और भक्तिवान था। हिरण्यकश्यप को उसका ऐसा होना अच्छा नहीं लगा अत: उसने होली को कहा कि वह किसी तरह प्रहलाद का खात्मा कर दे। होली के पास एक दिव्य चीर था जिस पर अग्नि भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाती थी। होली उसे ओढ़ प्रहलाद को अपनी गोद में लिए अग्नि में प्रवेश कर गई। इससे होली तो भस्म हो गई पर प्रहलाद बच गया।

इधर होली से शादी करने धूमधाम से ईलोजी की बरात आ पहुंची। जैसे ही ईलोजी को होली की इस घटना का पता लगा वे अपनी सुधबुध खो बैठे और होली के विरह में आजीवन कुंवारे रह विक्षिप्त हो गये। ऐसी स्थिति में वे आम लोगों में हंसी-मजाक और तिरस्कार के पात्र बने।

इसीलिए ईलोजी को निसंतान औरतें देवता के रूप में पूजती हैं। उन्हें नारियल अगरबत्ती की धूप देती हैं। उनके लिंग को पुष्प चढ़ाती हैं। कुम्‌कुम् के छींटे देती हैं। नवदंपत्ति उन्हें धूप-दीप कर उनसे शुभाशीष मांगते हैं। वहीं ईलोजी एक भौंडे के रूप में भी याद किये जाते हैं। 'ईलोजी रो काड़' नाम से एक भद्‌दी गाली भी हमारे यहां बड़ी चर्चित है। नामर्द आदमी के लिए भी गाली-रूप में ईलोजी शब्द का प्रयोग किया जाता है। होली के दिनों में कहीं-कहीं ईलोजी की आदमकद आकृति भी प्रदर्शित की जाती है तब लिंग ही उसका सर्वाधिक विचित्र वैशिष्ट्य रूप लिए होता है जो प्रत्येक की निगाह को अपनी ओर बांधे रखता है। उदयपुर की गणेशघाटी पर तो 'ईलोजी का नीम' आज भी बड़ा प्रसिद्ध है। किसी समय यहीं से एक व्यक्ति होली पर ईलोजी का स्वांग लिए निकलता था जो पूरी काली पोशाक पहनता था। यहां तक कि अपना चेहरा भी वह गहरे काले रंग में रंगा रखता था।

डॉ. धींग को अणुव्रत लेखक पुरस्कार

बिहार में बथनहा स्थित सशस्त्र सेना बल छावनी में आचार्य महाश्रमण की निश्रा में आयोजित अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह में डॉ. दिलीप धींग को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया।

अणुव्रत महासमिति अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन, महामंत्री अरुण संचेती तथा पदाधिकारियों ने डॉ. धींग को प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिन्ह और इक्यावन हजार का चेक प्रदान कर सम्मानित किया।

डॉ. धींग ने कहा कि समाज और देश के अभ्युदय में संत, सिपाही और साहित्यकार की अहम् भूमिका होती है। इस समारोह में ये तीनों ही मौजूद हैं।

होली अंक पढ़कर

लोटपोट गधा :

लोटपोट हो रहा गधा, होली पर ऐसे।
अंग-अंग में कामुड़ा, फुदकत हो जैसे।।
गधा भौंकता, गधी भौंकती भागी जाती।
राम-राम रामुड़ा करता, घरवाली शर्माती।।
यह लो जी, ईलोजी, मन में सोच रहे हैं।
जैसे जिसने कर्म किये, सो भोग रहे हैं।।
कह 'कांदा' कविराय जानिये मौसम को भी।
अरे बिगड़ता क्या है, हवा मिली है जो भी।।

ठंडी-ठंडी हवा :

ठंडी-ठंडी हवा, गुदगुदी दे जाती है।
बिना कहे ही जैसे, सबकुछ के जाती है।।
जहां काम नहीं करती वाणी, कर जाता संकेत।
सृष्टि फूलती फलती यारों, ऐसे ही ज्यों रेत।।
ज्ञान-बीज अंकुर होता है, घने अंधेरे बीच।
पानी ऊपर कमल, किन्तु लिपटा रहता है कीच।।

होली का डांडा :

होली का डांडा, होली पर ही शोभित होता है।
कैसे रस आये गमले में, जो गन्ना बोता है।।
ऐसी क्या जल्दी, जल्दी में ही जो आती।
जल्दी-जल्दी कह, फिर जल्दी ही भग जाती।।
अ लगने से निशा, अ-निशा हो जाती है।
किंतु सुबह कहने से, रात नहीं आती है।।

लाल गुलाल :

लाल-लाल होती नहीं, फिर भी लाल गुलाल।
यह कैसी है मसखरी, सबके गाल गुलाल।।
इस मौसम में सभी दीखते, लाल गुलाबी।
लाला का ताला, लाली की दो मुंही चाबी।।
लाल लाल क्यों हो रहे, अरे बसंतीलाल।
दाल भात मूसल बने, देख बाल की खाल।।

- कांदेश्वर, भोपाल

पोथीखाना

पर्यटन प्रबंधन और प्रचार पर दो पुख्ती पुस्तकें

विगत दो-तीन दशकों में पर्यटन को लेकर पूरे विश्व में नई हलचल देखी जा रही है। किसी कोने में अलग-थलग पड़ा अंचल भी अब अंतर्राष्ट्रीय जिजीविषा के संदर्भों से जुड़ने की उत्सुकता लिए लगता है। विश्व भ्रमण के लिए पर्यटकों की आवाजाही का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। एक उद्योग के रूप में पर्यटन का प्रबंध, उससे जुड़े विकास की नई-नई संभावनाएं बढ़ती जा रही हैं और मीडिया ने भी अपनी भूमिका को विस्तार देते हुए नित नवीन प्रयोगधर्मिता के नव्य-भव्य परचम दिये हैं।

डॉ. मंजू पाण्डेय इन सबकी खबरनवीस बनी अपनी अनुभवी आंखों में व्यावहारिकता के तालमेल से कागद लेखी बनी हुई हैं। उन्होंने पर्यटन प्रबंधन और मीडिया तथा समग्र विकास एवं पर्यटन नामक दो ग्रंथों का प्रणयन कर बड़ा मूल्यवान योग दिया है।

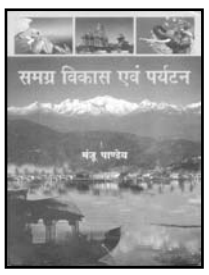

पर्यटन प्रबंधन और मीडिया के कुल सात अध्यायों में लेखिका ने भूमंडलीकरण एवं पर्यटन, पत्रकारिता की अवधारणा, क्षेत्र एवं विविध आयाम, पर्यटन प्रबंधन एवं मीडिया के परस्पर संबंध, मीडिया की भूमिका, पर्यटकों, मीडियाकर्मियों तथा अन्य संबंधितों का विश्लेषण जैसे बिन्दुओं पर पहलीबार प्रकाश डालकर न केवल इस कृति को अपितु अपने अध्ययन को भी नई संभावनाओं से पुष्ट किया है। समग्र विकास एवं पर्यटन पुस्तक भी सात अध्याय लिए है। लेखिका ने इसे जोरदार ढंग से रेखांकित किया है कि समग्र विकास के लिए जहां पर्यटन की भूमिका उल्लेखनीय है वहां पर्यटन के बिना समग्र विकास की कल्पना भी निराधार है। आवश्यकता इस बात की भी है कि सर्वथा वंचितों और विकास की धारा से वंचित रहे लोगों के विकास की रूपरेखा वे स्वयं तैयार करें। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं कागज-पानड़ों में ही दिलखुश होकर अपनी उपलब्धियां बखान करती हैं। जिनके लिए हैं उन तक इन योजनाओं की भनक पहुंचे और अपनी धाराओं से उन्हें निराधार नहीं रखें। इस दृष्टि से भी ये पुस्तकें पाठकों, पर्यटकों और पर्यालोचकों में पहचानी जायेंगी। जिल्ददार छपाई की दोनों पुस्तकें ढाई सौ से अधिक पृष्ठ लिए क्रमशः 495 तथा 500 रुपये मूल्य की हैं जो सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हैं।

बांस केन्द्रित चौमासा का उपयोगी अंक

चातुर्मासिक पत्र 'चौमासा' का प्रकाशन आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल से पिछले 32 वर्षों से नियमित रूप से होना उल्लेखनीय है।

यह समय ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां ढेरों पत्र-पत्रिकाएं नियमित-अनियमित रूप से निकल रही हैं किन्तु वे जो सामग्री प्रकाशित कर रही हैं वह धकाने वाली ही अधिक देखी जा रही हैं। कुछ जो अच्छी पत्रिकाएं हैं वे नियमित नहीं हैं और जो नियमित रूप से बहुत अच्छी पत्रिकाएं थीं वे सदैव के लिए बंद ही हो गईं।

बांस केन्द्रित प्रस्तुत अंक में 19 आलेख हैं। इनके लेखक लोकसाहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में लगातार पिछले लम्बे समय से लिख रहे हैं। उनका लेखन किन्हीं पुस्तकों का संचित बासी लेखन

नहीं होकर क्षेत्रीय सर्वेक्षण-अध्ययन का आंखों देखिन अनुभवी आंखों का दरसाव देता लेखन है। बांस जैसे विषय पर इतनी उम्दा और सारगर्भित सामग्री का प्रकाशन ही संपादक अशोक मिश्र की प्रज्ञा-मनीषा की उपज पर अचरज होता है। अपने संपादकीय में उन्होंने स्पष्ट किया है-

''वैदिक और पौराणिक ग्रंथों में जिन शंकाओं के समाधान नहीं मिलते, उन सभी संशयों का मौखिक परम्परा और उसके आचरण में स्पष्ट रूप से नहीं, संकेत रूप में मिल ही जाता है। वनस्पति जगत में बांस एक ऐसी अवस्था है जिससे जीवन का रूपान्तरण संभव है और वह मुक्ति का प्रदाता भी है। बहुत गहरे में प्रत्येक जीव का अंतिम तत्व भी मुक्ति है। संभव है हमारे पूर्वजों ने मुक्ति के इस अद्वितीय प्रतीक को इतनी महिमा और महात्म्य प्रदान किया हो।''

कुल 172 पृष्ठीय विविध चित्रात्मक आर्ट पेपर पर रंगीन छपाई युक्त सामग्री लिए इस अंक की कीमत मात्र 20 रूपया है। मेरी दृष्टि में प्रत्येक पढ़े लिखे घर में यह अंक उस घर की शोभा बनेगा। **-भात**

समाज की अबखायों का जीवंत दस्तावेज

'मैं हूं विरहण पीव री' पुस्तक यों तो श्रृंगार की लिखी लगती है किन्तु पढ़ने पर लगता है, यह हमारी मुश्किलों, परेशानियों और दोहरे जीवन जीते मनुष्य का जीवंत उदाहरण है। दोहे और सोरठे छंद में पोथी में भ्रष्टाचार, शराबबंदी, मंहगाई, बाजारवाद, पाखंड, अनीति, भ्रूणहत्या पर कवि ने दो-दो हाथ किये हैं-

आयै दिन अखबार, खबरां छापै सूगली।
कुणरै करै विचार, भांग कुवै में श्यमला।।
गीत होगिया मून, सबद बिकै बाजार में।
अैड़ी बाजी पून, ज्यूं झोलो रै श्यामला।।
झोलो बाज्यो खेत में, बळग्या हरिया खेत।
पैली-सी मौबत कठै, किकर छोड्यो हेत।।
अब पंछी आवै नहीं, पाछा म्हारै गांव।
पीवण नै पाणी नहीं, नीं बैठण नै छांव।।
बेटी अब कैयां बचै, घर हत्यारा लोग।
भ्रूण हत्या मां-बाप सूं, वठै देज रो रोग।।
मेटो भ्रष्ट अचरण नै, ओ केसर रो रूप।
करै देश नै खोखलो, नाखो ऊंडै कूप।।

-जितेन्द्र 'निर्मोही'

कविता की प्रतिष्ठा का सवाल

साहित्य मर्मज्ञों का कहना है कि अब कविता की तादाद तो बढ़ रही है किन्तु अच्छी कविताओं का ग्राफ घटता जा रहा है। ऐसे संकलन धड़ल्ले से आ रहे हैं जिनसे कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।' और कुछ हो न हो, कवि जरूर हुआ जा रहा है। इससे निश्चय ही कविता की पैठ को धक्का लगा है पर हर बस्ती में बस्तीलाल की बहार है, जिया बेकरार भले न हो।

कुछ नामधारी कवियों के साथ अनामधारी कवि मिलकर कविताओं का संग्रहण करते हैं। छपने पर कवियों का उत्तरायण चल पड़ता है। ऐसे में कचरापात्रों पर कविताएं बनती ही नहीं, वे उन पर शोभित भी होती लगती हैं। लोकतंत्र की यह सुखद स्थिति है। प्रस्तुत पुस्तक में कविताएं अधिक हैं। कविताएं नहीं मिलीं तो कुछ गद्य रचनाएं भी ली गई हैं। हीरालाल लुहार 'हिन्द', बाबूलाल पाटीदार तथा हिमांशु जानी द्वारा संपादित इस पुस्तक में जहां जगह बची वहां विशिष्ट काव्यांश, ज्ञात-अज्ञात विचार-कण दे दिये हैं। वर्तनी की अशुद्धियां कम होती हुई भी खटकती हैं। **-विकल्प मेहता**

पोथीखाना

राजस्थानी महिलाओं में प्रचलित आभूषण

सिर से पांव तक पहने जाने वाले आभूषण-

सिर के आभूषण - बोरलो-नाली, रखड़ी, मांग टीको, टीडी भलको, सूवाभलको, टीको, मोर मींडी, झूटणां, सांकली, फीणी-सरी, पात, तागो, सिणगार पट्टी, सीस फूल, क्लिप-जुड़ो, चोटी, मैमद, खैंचा, सिल्लक, चीर पट्टी, फते चांद कचारिया।

नाक के आभूषण - कांटो, भंवरियो, कोको, भोगली, नथ, डांडलो, भलको, सरी, नक बेसर नथ बीजली, बुलाक।

दांत के आभूषण - चूंप, मासा, सोने का दांत (दांतों के ऊपर सोने की खोली वाला।)

कान के आभूषण - कनफूल, सूरलिया, टोपस, कनौती, बाली, बाला, कोकरू, मामा मुरकी, पोपल पान, लूंग, गुड़दा, सांकली, पासा, मणी, पत्ती, माकड़ी, झूमका, झूमरिया, मुरकी, बूजली, टोटी, मछली, ऊपरकीन्यो, कुंडल, मोती चौकड़ा, सुरग बाली, ओगणिया, बीरबली।

गले के आभूषण - तीमणियो, टेंवटो, हनेल, गलसरी चिक, कालर, हार, गलपटियो, कंठी, लड़ मूरत, डोरो मटर माला, मोहन माला, फूल पतड़ी, जंतरियो, सतलड़ो, गोप, ढोलना, मादलिया, जंतरिया, कंठलो, कंठो, हंसली, सटको, बंटन, मंगल सूत्र, आड़, सीबा सांकली, ठूसी, अड़ो-कांठलो, चंदर हार, झालरो, तखती, तायत, धुगधुगी, गल सांकली, तिलड़ी।

हाथ के आभूषण - बाजू-जोसण, अणत, टड्डा, आर्मलेट, चौथ, चूड़ो, पात, टीप-मासा वाला चूड़ा, कड़ा, कंगण, पाटला, चूड़ी, नोगरी नखिया, पूंची, पूंचियो, बंद, बंगड़ी, खंजरी, पछेली, राय फूल, गजरा, सूतड़ा, हथ सांकलो, छाप, छल्ला, मून्दड़ो, मूंदड़ी, बेल, आरसी, अंगूठी, अंगूठड़ा, तकमा, चूड़, गुजरी, बिलिया, दावणो, चम्मक चूड़ी, जवा, छैल कड़ा, बींटी, गोरखधंधो।

कमर के आभूषण - तागड़ी, तालियो, कांकड़ा, साड़ीपिन आदि। हरेक गैणा घणी-घणी भांत रा बणीजता। तागड़ी रा भी केई भेद है- जियां : तागड़ी बतक री, झालर री, बिसकुट री, कंसलै री, पान री, डमरू री, मादलिया री, दाल री, मकोड़ां री।

पांव के आभूषण - तांती, कड़ो, लंगर, पाजेब, मच्छी, बिछिया, पोला, पोली, सूतड़ा, चींटूड़ी, अंगूठड़ा, नखलिया, तोड़िया, पैंजणी, घूघर की छड़, रमझौल।

लोकगीतों में वर्णित आभूषण

राजस्थानी लोकगीतों में नख-शिख तक के जिन आभूषणों का वर्णन पाया जाता है वे इस प्रकार हैं-

बेला- पैर के अंगूठे में पहिनने का आभूषण। **हीचा**- पैर की सबसे छोटी अंगुली में पहनने का आभूषण। **इच्छा और मच्छी**- पैर के बीच की तीन अंगुलियों में पहनने का आभूषण। **अणवट**- पैर के अंगूठे के ऊपर पहनने का जंजीरनुमा गुंथा हुआ आभूषण। **जामी**- पैर की अंगुलियों के ऊपर पहनने का जंजीरनुमा आभूषण। **पिंजणी, पायल**- पांव में पहनने का आवाजदार आभूषण। **झांझरिया**- पांव में पहनने का छोटी-छोटी घुघरियों से गठा हुआ आवाजदार आभूषण। **रमझोल**- चेन और घुघरियों से गंठा हुआ पांव में पहनने का आवाजदार आभूषण। **कड़ा**- पांव का ठोस चांदी का आभूषण। **कल्ला**- पांव में पहनने का पीला आभूषण। **तोड़ा**- चंदी की घुमावदार कड़ियों का पांव का आभूषण। **काम्या**- पांव के पंजे तक फैला हुआ तोड़ा, कलात्मक आभूषण। **कंदोरा**- कमर में पहनने का आभूषण। **मूंदी या छल्ला**- हाथ की अंगुली में पहनने का आभूषण। **आरसी**- हाथ के अंगूठे में पहनने का कांच से जड़ा आभूषण।

हाथ साकल्या- हाथ के पंजे पर पहनने का जंजीरदार आभूषण। **बंद**- पहुंचे पर पहनने का आभूषण। **चूड़ा**- हाथ में पहनने का लाख से बना नक्काशीदार सौभाग्यसूचक आभूषण। **कावलई**- हाथ में पहनने की चूड़ियां। **करोंदी**- चूड़ियों के बीच में पहनने का आभूषण। **गजरी**- कलाई पर पहनने का आभूषण। **कड़ा**- कलाई में पहनने का ठोस चांदी का आभूषण। **भावट्या**- बांह में पहनने का जंजीरों से गूंथा आभूषण। **बाजूबंद**- बांह में पहनने का आभूषण। **दुलरी**- गले का आभूषण। **हार सांकल्या**- गले में पहनने का जंजीरनुमा आभूषण। **मंगल सूत्र**- गले में पहनने का सौभाग्यसचक आभूषण। **हार**- गले का सोन का आभूषण।

नवसरियो हार- गले का नौसर का आभूषण। **टकावल्या**- गले में पहनने का चांदी के सिक्कों का आभूषण। **वजही**- गले का चांदी का आभूषण। **तुस्सी**- गले का सोने के दानों से युक्त आभूषण। **लोगली**- गले का अर्ध चंद्राकार आभूषण। **झुमका**- कान में पहनने का झूलनेवाला आभूषण। **टोड़ी**- कान का फूलदार आभूषण। **वालई**- कान में पहनने का गोल आभूषण। **करण फूल**- कान में पहनने का फूलदार आभूषण। **लालक**- नाक में पहनने का मोती का झूलता हुआ आभूषण। **बेसर**- नाक में पहनने का आभूषण। **नथ**- मोतियों के गंठा हुआ नाक में पहनने का सुंदर आभूषण। **कांटा**- नाक में पहनने का कीलनुमा आभूषण। **टीकी, बिंदी**- सिर में लगाने का सौभाग्यसूचक आभूषण। **भवर**- कपाल पर पहनने का आभूषण। **झब्बा**- कपाल पर लगाने का आभूषण। **राखड़ी बोरा**- सिर के बालों को गूंथने का आभूषण।

मोटापे की सर्जरी में उदयपुर का नया कीर्तिमान

उदयपुर। श्रीमती मानबाई मुर्डिया शांतिराज हॉस्पिटल प्राइवेट लि. में मोटापे की तीन शल्य चिकित्सा का

सफलतापूर्वक निष्पादन हुआ। जानेमाने बेरियाट्रीक सर्जन डॉ. सपन जैन ने 103, 127 और 136 किलो वजनी महिलाओं की सफल सर्जरी की। इसी के साथ डॉ. सपन जैन ने 100 बेरियाट्रीक सर्जरी व बेलूनोप्लास्टि पूरी कर ली है जो कि उदयपुर, कोटा तथा अजमेर संभाग में अपनेआप में रिकॉर्ड है।

प्रेसवार्ता में डॉ. सपन जैन ने बताया कि बेरियाट्रीक सर्जरी एक ऐसी तकनीक है जिसमें मोटे लोगों का वजन दूरबीन सर्जरी द्वारा कम किया जाता है। इसमें अमाशय के आकार को छोटा कर सर्जरी द्वारा छोटी आंत से जोड़ दिया जाता है। इससे डायबिटिज, ब्लड प्रेशर, स्लीप ऐप्नीआ, नि:संतानता जैसी गीमारियों का भी अंत हो जाता है। यह ऑपरेशन दूरबीन से होता है इसलिए शरीर पर कोई चीरा नहीं दिखता है। ऑपरेशन दर्द रहित होता है और मरीज को 2-3 दिन में अस्पताल से छुट्टी मिल जाती है। ऑपरेशन के बाद पहने दिन से ही वजन कम होने लगता है और 3-6 महीनों में 40 से 80 किलो वजन कम हो जाता है। इस मौके पर निदेशक नरेश शर्मा, डॉ. उस्मान खान, डॉ. बी. एस. छाबड़िया, हसमुख सेन, बी.एल. जाट, जयदीप तिवारी, हॉस्पिटल प्रबंधक सुमित माथुर उपस्थित थे।

सुमित माथुर बताया कि डॉ. सपन जैन पिछले पांच वर्षों से लगातार मोटापे का इलाज ऑपरेशन और बिना ऑपरेशन के बलून द्वारा सफलतापूर्वक कर रहे हैं। बेरियाट्रीक सर्जरी के लिए डॉ. सपन जैन की दक्ष टीम है जिसमें कार्डियोलोजिस्ट और बेरियाट्रीक फिजिशियन डॉ. गजेन्द्र जोशी, डॉ. अर्चना जैन डॉ. बी. एस. रानावत और डॉ. नवीन पाटीदार शामिल हैं। माथुर ने बताया कि शांतिराज हॉस्पिटल में मोटापे से संबंधित सभी जांचें और ऑपरेशन किये जाते हैं। मोटापे में ऑपरेशन के लिए जर्मनी से आयातित की गई विशेष ऑपरेशन टेबल पर मोटे लोगों का ऑपरेशन किया जाता है।

कबाब फूड फेस्टिवल

उदयपुर। द ललित लक्ष्मीविलास पैलेस के आंगन रेस्टोरेंट में 19 मार्च तक कबाब फूड फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा है।

फूड एंड बेवरेज मैनेजर देबेन्द्र ओझा ने बताया कि होटल में राजस्थानी संगीत की मधुर स्वरलहरियों के बीच रसीले कबाब के साथ ललित की सिग्नेचर दाल बलूची और मनपसंद रोटी का स्वाद आगन्तुक मेहमान ले रहे हैं। भारतीय जायकों में खास मसालों का ध्यान रखते हुए ललित के एक्ज्यूकेटिव शेफ द्वारा कबाब बनाने में स्थानीय मसालों का प्रयोग किया जा रहा है। श्री ओझा के अनुसार यहां पर उदयपुराईट्स के लिए स्वादिष्ट दही और अंजीर के कबाब, अफगानी पनीर टिक्का, सरसों वाली मच्छी, बन्नो कबाब के साथ ढेर सारे विकल्प उपलब्ध हैं। रेजिडेंट मैनेजर गौरब देब ने बताया कि यहां उपलब्ध कबाब और प्रीमियम पेय पदार्थ का संयोजन खास है। आगन्तुक मेहमान परिवार और मित्रों के साथ केण्डल लाईट डिनर के आनंद के साथ फतहसागर के मनोरम दृश्य और सांस्कृतिक संध्या का लुत्फ उठा रहे हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का आयोजन

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि., आर. के. नगर, निम्बाहेड़ा में 46वाँ राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह सम्पन्न हुआ। मुख्य

अतिथि मुख्य निरीक्षक-कारखाना एवं बोयलर्स जे. आर. गौतम एव वंडर सीमेंट लि. के अध्यक्ष एस. एम. जोशी ने ध्वजारोहण, दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कम्पनी में कार्यरत कर्मचारियों, अधिकारियों, नियोजित श्रमिक एवं ठेकेदारों को सुरक्षा की शपथ दिलाई गई।

प्रारंभ में कम्पनी के सुरक्षा अधिकारी अभिषेक कुमार ने वर्ष 2016 में वंडर सीमेंट लि. के सुरक्षा आंकड़े एवं कम्पनी में सुरक्षित कार्य संपादन हेतु किये गये मुख्य कार्यों से सभी को अवगत कराया। मुख्य अतिथि जे. आर. गौतम ने सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी और वंडर सीमेंट द्वारा सुरक्षा एवं स्वास्थ्य कल्याण की दिशा मे किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

अध्यक्ष एस.एम. जोशी ने सुरक्षा थीम 'सुरक्षा एवं स्वास्थ्य में नेतृत्व से व्यवसाय में स्थिरता बढ़ती है' के अनुसार सभी कर्मचारीयों को अपने दायित्व, कर्तव्य एवं काम में इसका समावेश करने का तरीका बताया तथा इसकी पालना हुए सुरक्षित कार्य संपादन करने हेतु प्रेरित किया। सुरक्षा सप्ताह के दौरान स्लोगन, पोस्टर, प्रश्नोत्तरी, वार्ता तथा सुरक्षा संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे कर्मचारियों एवं श्रमिकों को पुरस्कृत किया गया। गुणवत्ता एवं पर्यावरण महाप्रबंधक प्रदीप जैन ने धन्यवाद की रस्म अदा की जबकि संचालन गिरिश श्रृंगी ने किया।

अभिजीत सरकार को मिला चाणक्य ज्यूरीज़ स्पेशल अवॉर्ड

उदयपुर। अभिजीत सरकार, हेड-कॉर्पोरेट कम्युनिकेशंस, कॉर्पोरेट रिलेशंस एंड स्पोर्ट्स, सहारा इंडिया परिवार, डायरेक्टर-सहारा फोर्स इंडिया तथा गार्जियन-सहारा मीडिया को वर्ष 2017 के प्रख्यात चाणक्य अवॉर्ड फ़ॉर नेशनल अचीवर्स ज्यूरीज़ स्पेशल अवॉर्ड क्राइसिस कम्युनिकेशंस के लिए प्रदान किया गया है। बेंगलुरू में आयोजित समारोह में कर्नाटक के को-ऑपरेशन और सोशल वेलफेयर मंत्री एच. आंजनेय ने अभिजीत सरकार को यह अवॉर्ड दिया। यह सम्मान उन्हें पब्लिक रिलेशंस काउंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा 11वें ग्लोबल कम्युनिकेशन कॉन्क्लेव के दौरान प्रदान किया गया। साथ ही वार्षिक कॉर्पोरेट कॉलेटरल अवॉर्ड्स-2017 के अंतर्गत सहारा न्यूज़ नेटवर्क द्वारा आयोजित 'थिंक विथ मी' 2016 को बेस्ट कॉर्पोरेट इवेंट ऑफ़ द ईयर का सम्मान प्रदान किया गया।

अभिजीत सरकार, को पीआरसीआई ने यह अवॉर्ड सहारा-सेबी मुद्दे में प्रभावशाली व कुशल कम्युनिकेशन संचालन के लिए दिया है। उनके अनूठे कम्युनिकेशन से जुड़े समाधानों ने न केवल 9 करोड़ निवेशकों से उचित संपर्क बनाए रखा अपितु सहारा समूह में उनका विश्वास व भरोसा भी कायम रखा। अभिजीत सरकार ने 'थिंक विथ मी' हेतु 'बेस्ट कॉर्पोरेट इवेंट ऑफ़ द ईयर' को दी गई ट्रॉफी व प्रमाण-पत्र भी ग्रहण किए।

वंडर सीमेंट लि. द्वारा 10 लाख का सहयोग

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि. के सहायक उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन ने मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के द्वितीय चरण में जल संरक्षण के विभिन्न कार्यों में सहयोग हेतु 10 लाख रुपये का चेक चित्तौड़गढ़ जिला कलेक्टर को हस्तान्तरित किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने कम्पनी प्रबन्धन का आभार जताते हुए बताया कि इससे जिले में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के द्वितीय चरण को गति मिलेगी।

नितिन जैन ने बताया की वंडर सीमेंट लि. द्वारा इस अभियान के प्रथम चरण में चित्तौड़गढ़ जिले में 20 लाख तथा उदयपुर जिले में 20 लाख रुपये का सहयोग कर अभी तक कुल 40 लाख रुपये की राशि सहयोग हेतु दी जा चूकि है। वंडर सीमेंट लि. प्रारम्भ से ही जल संरक्षण के कार्यों में अग्रणीय रहा है, जिसमें 111 हैक्टेयर में पौधारोपण, वर्षा जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण एवं पंचफल उद्यान में ट्रेंच विधि से वृक्षारोपण जैसी गतिविधिया शामिल है।

टाटा क्रूसिबल कैंपस क्विज़ 2017 में संजय और राजेंद्र बने विजेता

उदयपुर। इस साल अपने 13वें संस्करण में प्रवेश करने वाली टाटा क्रूसिबल कैम्पस क्विज़ प्रतियोगिता देशभर के 38 शहरों में आयोजित की जा रही है। टाटा क्रूसिबल कैम्पस क्विज़ 2017 के तहत् आयोजित सोनीपत रीजल राउंड में नेशनल लॉ यूनीवर्सटी, जोधपुर के संजय कृष्णा और राजेंद्र डंगवाल 195 टीमों को पछाड़कर विजेता बने। अब उनका मुकाबला मुंबई में ज़ोनल फाइनल में छह अन्य टीमों के साथ होगा।

एम्स के अंशुल शर्मा और सृजन सिन्हा को उप-विजेता घोषित किया गया। समारोह के अध्यक्ष मोहनलाल सुखाड़िया यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. जे. पी. शर्मा ने की और विजेताओं को सम्मानित किया।

उदयपुर रीजनल राउंड के विजेताओं को 75,000 रुपये तथा उप-विजेताओं को 35,000 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान की गई। नेशनल फाइनल के विजेता को टाटा क्रूसिबल ट्रॉफी के अलावा 5,00,000 रुपये का ग्रैंड पुरस्कार दिया जाएगा। चार चरणों वाली फाइनलिस्ट टीमों में विजेताओं और उप-विजेताओं के अलावा, अभिनंदन मिश्रा और प्रतीक. एस (आईआईएम), राहुल जोरा और राघव उदयवाल (एस एस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग), नितिश शर्मा और अर्पित के और आईआईएम से अपूर्व एस और देबज्योति डे शामिल थे।

क्विज़ के हर खंड को तीन रांउड्स - 'लीग ऑफ लीजेंड्स', 'नीड ऑफ स्ट्रैटेजी' तथा 'गेम ऑफ क्राउंस' में बांटा गया है। क्विज़ का संचालन जाने-माने क्विज़मास्टर गिरी सुब्रमण्यम ने जो कि 'पिकब्रेन' के नाम से मशहूर हैं, किया और उन्होंने प्रतिभागियों तथा दर्शकों को लगातार क्विज़ से जोड़े रखा।

टाटा क्रूसिबल कैम्पस क्विज़ के विजेता ज़ोनल फाइनल मुकाबले में उतरेंगे। ज़ोनल फाइनल दौर के मुकाबले नई दिल्ली (ज़ोन 1), कोलकाता (ज़ोन 2), मुंबई (ज़ोन 3), कोयंबतूर (ज़ोन 4) और हैदराबाद (ज़ोन 5) में आयोजित किए जाएंगे। हर ज़ोन की दो दिग्गज टीमें मुंबई में अप्रैल 2017 में आयोजित होने वाले नेशनल फाइनल में खिताबी मुकाबले के लिए आमने-सामने होंगे। इस साल के पुरस्कार टाटा डोकोमो तथा टाटा मोटर्स की ओर से प्रदान किए जाएंगे।

रेसिंग चैम्पियनशिप के लिए चालकों का चयन

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने टी1 प्राइमा ट्रक रेसिंग चैम्पियनशिप 2017 सीजन 4 के लिए राजस्थान से चार चालकों का इस रेस में अपना कौशल दिखाने के लिए चयन किया है। इन चालकों में

उदयसिंह, मुबारिक, राजूलाल गुर्जर, और भागचंद के साथ ही 33 अन्य भारतीय चालकों का इस प्रतियोगिता के सीजन 4 के लिए चयन किया गया है। इस चैम्पियनशिप में जर्मनी, स्पेन, हंगरी (चेक गणराज्य) और फ्रांस के ट्रक रेसर भी भाग लेंगे सीजन 4 टी1 में पहली महिला चालक स्टीफेन हेलम भी भाग ले रही हैं।

इस चैम्पियनशिप के दौरान टाटा मोटर अपने अति शक्तिशाली ट्रक द 1000 बीएचपी टी1 प्राइमा रेस ट्रक का भी प्रदर्शन करेगा। भारत के 33 ट्रक चालकों को टी1 रेस प्रोग्राम (टीआरपी 2.0) के सेमीफाइनल राउण्ड में काफी कड़ा मुकाबला करना पड़ा, जिनमें से 20 चालकों का चयन सीजन 4 टी1 प्राइमा ट्रक रेसिंग चैम्पियनशिप के विश्व के विख्यात एफ 1 रेस ट्रैक द बुद्धा इंटरनेशनल सर्किट (बीआईसी), ग्रेटर नोएडा में 19 मार्च 2017 को किया जाएगा।

टीआरपी 2.0 में चयनित 33 चालकों का चयन टीआरपी के पहले संस्करण में किया गया, जिनमें से 10 चालक चैम्पियन क्लास श्रेणी में किया गया है, जबकि नई प्रविष्टियों को टीआरपी 2.0 कार्यक्रम के टी 1 प्राइमा ट्रक रेसिंग चैम्पियनशिप के सीजन 4 में सुपर क्लास श्रेणी में रखा गया है। इन चालकों को तीन माह का का प्रशिक्षण एमओएमए (मोमा मोटरस्पोर्ट मैनेजमेंट) के कुछ श्रेष्ठ रेस इंस्ट्रेक्टर्स जो कि सीजन 3 के 'हीरो ऑफ हाइवे' रह चुके हैं प्रदान कर रहे हैं। टी1 प्राइमा ट्रक रेसिंग चैम्पियनशिप के लिए कुल 1000 आवेदन प्राप्त हुए थे जिसमें हरियाणा के जगत सिंह और आंध्र प्रदेश के नागार्जुना सहित अन्य ने सीजन 3 में भी भाग लिया था। जो कि ट्रक रेसर कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण है।

डॉ. महेन्द्र भानावत की प्रकाशनाधीन नई कृति

जैन लोक का पारदर्शी मन

धर्मस्थानों में मुख्यत: महिलाओं में प्रचलित श्रुत-साहित्य का पहलीबार प्रकाशन। पारम्परिक कंठासीन साहित्य की विविध विधाओं में गरभ चिंतारणियां, थोकड़े, स्तुतियां, चौबीसियां, पखी गीत, तपस्या गीत, साधु-साध्वियों के आगमन तथा विदाईपरक गीत, तीर्थंकरों से जड़े मंगल गीत, देशी संगीत, संथारा आदि पर सम्यक विवेचन।

तीन तलाक गैर इस्लामिक

उदयपुर। 11 मार्च को आयोजित दाउदी बोहरा सुधारवादी समूह की 15वीं अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता इन्दिरा जयसिंह ने कहा कि ट्रिपल तलाक गैर इस्लामिक होने के साथ-साथ असंवैधानिक भी है।

नालसार विश्वविद्यालय हैदराबाद के कुलपति प्रो. फैजान मुस्तफा ने कहा कि आम मुसलमान 8वीं-9वीं सदी में ही चल रहा है इसीलिए पिछड़ रहा है। संविधान ने हमें धर्म को मानने की अजादी दे रखी है लेकिन हमें धर्म से और धर्म के भीतर भी आजादी चाहिये। पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त हबीबुल्लाह ने कहा कि अगर सरकार और प्रधानमंत्री से जवाबदेही मांगी जा सकती है तो धर्मगुरु से क्यों नहीं। राज. प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष वेद व्यास ने कहा कि हिन्दुओं को भगवान ने, मुसलमानों को अल्लाह ने और जैनों को महावीर ने डरा रखा है। लोग धर्म के एजेन्टों से परेशान हैं। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि अल्लाह और प्रभु के बीच किसी बिचौलिये को न आने दें।

ललित शर्मा को महाराणा कुंभा सम्मान

इतिहास लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के फलस्वरूप झालावाड़ के इतिहासकार ललित शर्मा को महाराणा कुम्भा सम्मान प्रदान किया गया। फाउण्डेशन के प्रमुख न्यासी एवं निदेशक श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने शर्मा को रजत तोरण, शॉल, सम्मान पत्र एवं 51 हजार रूपये की राशि का चैक प्रदान किया। ललित शर्मा ने अपने 12 शोधग्रंथ एवं 1700 से अधिक शोध आलेख प्रकाशित करवाकर हाड़ौती एवं मालवा प्रदेश के इतिहास एवं पुरातत्व पर अनेक मौलिक और अन्धकारपूर्ण पक्ष उद्घाटित किये हैं। - **गायत्री शर्मा**

घासफूस से सजीधजी होली का यह रूप सर्वत्र देखने को मिलता है। मेवाड़ में सेमल वृक्ष की कांटेदार फफोलेनुमा होली का विशेष प्रचलन है। कहते हैं, होलिका ने जब अग्नि में प्रवेश किया तब उसका पूरा शरीर ही झुलस गया था और पूरा अंग फफोलों से भर आया था। दूसरे दिन उसकी राख के पिण्ड बनाकर लड़कियों ने उन्हें दूब-पत्तों से सजाकर पूजा करना शुरू कर दिया और सौलह दिन तक उसकी पूजा की तो वे पिण्ड एक षोडशी की प्रतीक गणगौर के रूप में साक्षात् हुई। दूसरी ओर होली की राख को किसानों ने अपने खेत की पाल पर खाद के रूप में काम में लिया तो वहां साक्षात् होली के रूप में जो वृक्ष उग आया उसे होलिका के रूप में प्रतिवर्ष रोपकर कर उसकी याद बनाये रखना प्रारंभ कर दिया। दूसरे चित्र में कांटेदार हेमळ का होली रूप द्रष्टव्य है। **-फोटो- दिनेश कुदाल**

धोरां री धरती का रोमांच

14 फरवरी को दिलीप जैन धार से उदयपुर अपने भाई राजेन्द्र की 25वीं सालगिरह मनाने आया। दोपहर की चाय

के दौरान बातों ही बातों में शैलेष नागदा ने जैसलमेर चलने के लिए कहा। सोचते-सोचते लगभग साढ़े चार बज गये। फटाफट तैयारी की और रात्रि 8 बजे दिलीप की स्कोर्पियो से मेरे साथ रंजना, शैलेष के साथ भाभी डॉ. श्वेता, दिलीप के साथ पल्लवी निकल पड़े। रात को एक बजे जोधपुर पहुंचकर विश्राम किया। 15 फरवरी सुबह जैसलमेर के लिए रवाना हुए। रास्ते में डेचू गांव के पास समसारा रिसोर्ट देखा जिसमें रेगिस्तान में पानी की बहार देखने को मिली। इसी समसारा का पर्सनल सेनड्यूज भी देखा। दोपहर जैसलमेर में भोजन कर सीधे सम पहुंचे। सम जहां चारों तरफ रेत ही रेत। यहां हमने रात टेंट में गुजारी। शाम को जीप सफारी और केमल सफारी का रोमांच लिया। जीप सफारी ने रेत की चकरियों में इतनी चकरियां खिलाई कि हमें निरंतर चक्कर-दर-चक्कर आते रहे और कई बार उन चक्करों के बीच जीप को सीधी खड़ी देख तो हमें साक्षात् मौत के कुए के ही दर्शन हो गये। ऊंट पर सवारी के हिचकोले भी जीवन में पहलीबार खाने को मिले। कोई हिचकोला ऐसा नहीं था जो हमें घबराहट नहीं दे गया। हम सोचते ही रह गये कि ऊंटपाल अपने जीवन को बचाते हुए कैसे रेत के धोरों में अपना जीवन बसर करते हैं। रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया।

16 फरवरी की सुबह जल्दी उठकर आगे की रूपरेखा तय की गई। मैंने सोचा कि जब यहां तक आए हैं तो क्यों न तनोट माता के दर्शन किये जाएं। तनोट माता का मंदिर सम से लगभग 130 किमी दूर है। दिलीप और शैलेष जैसलमेर की ओर रवाना हुए जबकि मैंने और रंजना ने तनोट माता के

लिए राह पकड़ी। रास्ते में रेत के धोरे देख जो रोमांच हुआ वह सर्वथा अद्भुत और अकल्पनीय अनुभव था। सेठियाजी की धरती धोरां री कविता की एक-एक पंक्ति की सार्थकता का बोध स्वर्गिक सुख दे गया।

तनोट माता का मंदिर भारत-पाकिस्तान बॉर्डर के निकट है। यह मंदिर लगभग 1200 साल पुराना है। वैसे तो यह मंदिर सदैव ही आस्था का केंद्र रहा है पर 1965 की भारत-पाकिस्तान लड़ाई के बाद यह मंदिर सर्वत्र अपने चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हो गया। इस लड़ाई में पाकिस्तानी सेना की तरफ से गिराए गए करीब 3000 बम भी मंदिर पर सर्वथा निष्प्रभावी रहे। देवी चमत्कार से मंदिर परिसर में गिरे 450 बम तो फटे तक नहीं। ये बम मंदिर परिसर में बने संग्रहालय में सुरक्षित रखे हुए हैं। लड़ाई के बाद इस मंदिर का जिम्मा सीमा सुरक्षा बल ने अपने अधीन लिया और अपनी एक चौकी भी स्थापित की। इसी मंदिर की दीवालों पर सैंकड़ों की संख्या में रस्सी के सहारे विविध रंगी रूमाल बंधे हुए हैं। पूछने पर बताया गया कि जो भी श्रद्धालु आता है वह किसी कार्य सिद्धि के लिए मनौती लेता है और बदले में यहां रूमाल टांगता है और मनौती पूर्ण होने पर पुन: यहां आकर अपना पहले वाला रूमाल खोलता पाया जाता है। वहां से लोंगेवाला होते हुए 3 बजे जैसलमेर पहुंचे। वहां गढ़ीसर झील, सोनार किला और पटवों की हवेलियां देखीं। रात्रि को थकान से चूर हो होटल में रात्रि विश्राम किया और 17 फरवरी को प्रात: जैसलमेर से चलकर उदयपुर पहुंचे।

-डॉ. तुक्तक भानावत

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 1.3.2017

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

कान्यो मान्यो

गाम री बदलती तस्वीर

कान्यो मोबाईल माथे बोल्यो, आज म्हूं म्हारे गांम जाइर्‌यो हूं। सांझ तांई आव परो मिलूंगा। केई म्हीनां वेवा आइग्‌या। जूना पुराणा गोठी है वांरो हालचाल पूछलूंगा। ब्याव री कंकोपतर्‌यां भी देणी है। काम सधारो तो डीलां पधारो केवत परवाणे सगासोई ने मौका माथे नी बुलावां तो ओलम्बो रे जावे।

मान्यो बोल्यो, जदी जाई आव। म्हारो भी मलणो कीजै। टाबरां माथे हाथ फेरजै। नानकी काकी, नवा काकी ने हूड़ी जीजां नै मलणो कीजै। अन्दर भाबा, चन्दरी भुवा, हेंका माऊ नै बेरा बाजी रे धोग लागजै। गागूबा री चरकली, रामा दादा री कंकू, दल्या री धापूड़ी, चतरभज दादा री बगदी कठे है, पतो लावजै। यांनै परण्यां पछै देखी नीं।

कान्यो हंसबा लागो, बोल्यो, दादा कस्या जग जामारा री वातां कर्‌या हो। जतरा भी नाम लीधा, म्हूं एक ने नी जाणूं। फेर वठै पोंच ने वात करूंला। गाम कोई अस्यो मोटो नी के फेरी देतां दन लागजा। जठी ने जावो वठी ने वी-रा-वी लोग ने वी-री-वी गलियां। कुम्हारवाड़ी, गांछा री गली, धींगा री घाटी। बोहरवाड़ी, भंग्‌यां रो हात, बारले सैर, खलतलाई, मोग्‌यां रो दरवाजो, ओपासरा री गली, रावला रो खरो, झालीवाव, केसर कुड़ी, जोइरो तलाव, छींपो मोहल्लो सबआड़ी फरकी जोई। सब बदलग्‌या केई रा नाम निसांण मिटग्‌या। धंधा-पाणी ऊंधा पड़ग्‌या। पुराणा मनक रामजी नै पगेलागा। नवा री ओरख पिछाण नीं।

केई दक्यारा अण भण्या कुंवारा हा। केई लुगायां रंडाईगी। वणा रा टापरा धूल खाइर्‌या। उत्तम बा केणी केवता तो ताव तेजरो भागी जातो। मोटीबाई करवरी अंगूठीऊं आंख्यां रो घोखो काढ़ती। हूड़ी रूपांबाई सोनाबाई री कैणी गावती। गब्बू भुवा चणबोर देती। आंधी मामी घट्‌टी रे घमोड़े सुवावती। नानकी जूंवां काढ़ती। अबै वो गाम, वा सरवरा, वा हवा, वो प्रेमभाव नीं मिलै। मोड़ा बा री मरमरी, लछमण दादा रा खोखा, ऊंकार बा री पगरख्यां, भैर्‌या रा पेड़ा नै कोई नी जाणै। बंबोरा रा रेजा रा पछेवड़ा नै वड़ी हादड़ी री दर्‌यां केई बरस चालती। फसलां माथै कस्या भी खेत परा जावता तो चरखी में हांटा रो रस पीवो। राकब लो। गोळ खावो। मक्या सेको। पेंकड़ा सेको। मूंफल्यां खावो। होरा लीलवा सेको, खावो।

मान्यो जाणे पंडितजी री कथा सुणेज्यूं छानामानो एक कान सुणतोर्‌यो। असी पुराणी वातां अबे कुण करै। वंडी पुराणी जबान अर पुराणी चाल री जीवण जगत री हालचाल सूं मन नी भर्‌यौ। कान्यो वंडो मन भांपग्‌यो जदी बोल्यो- एक पीरुवलो हो जठै लुगायां गणगौर माथै घूमरां लै साड़ी रे पल्ले रो जाळो दैती गावती- 'अनोखा सायबजी ओ सायब जाळो देऊं घर आव।' मादेवजी रो बळद लोगां रै मन री भाखणी करतो। मन धार्‌यो काम पार पटकतो। हंकरांत माथै अड़भोपा आवता। गरण पर भंगी टोपला माथै कर धानचून मांगता। पूनम-अमावस बामण नै पेट्‌यो मेलता। कदीकदाक सरकस आवतो। नार चीतरा गंडक ज्यूं पाल्या थका राते खेल करता। वांदरा-वांदरी नै भालू नचावा वारो आवतो। हांप नचावा वारो पूंगी री धुन माथै सांप नै झोला खवावतो। नट नटणी आवता। जादूगर मूंडास्यूं बम गोला काढ़तो।

इसकूल री छुट्‌यां मांय दनभर गुल्लीडंडा खेलता कै ताश कूटता। हप्पा खबड़ी खेलता। चीबां खेलता। कांकरा कूटता। भमरी लट्‌टू खेलता। मगरा डोटी नै केई दूजा खेल खेलता। खाणो पीणो भूल जावता। सुबै शाम तलाव या कुंड माथै पाणी में गंठा लगावता। पाणी में आउड़ो पाउड़ो खेलता।

कान्यो केवतोर्‌यो। मान्यो सुणतोर्‌यो जदी कान्ये मसखरी मारी, बेटा मुफत में कठातांई सुणेगा। सुणवा में नीं पण सुणावा में जीभ घिसै तो टको भाड़ो कुण दै। अबै सिनेमा री तस्वीर बंद करूं।

उदयपुर से अन्तर्राष्ट्रीय हवाई उड़ाने शीघ्र

उदयपुर। महाराणा प्रताप एयरपोर्ट उदयपुर की सलाहकार समिति के अध्यक्ष व चित्तौड़गढ़

सांसद सी.पी. जोशी ने केन्द्रीय विमानन राज्यमंत्री जयन्त सिन्हा से उदयपुर से अन्तर्राष्ट्रीय हवाई सेवायें प्रारम्भ करने की मांग की। इस पर सिन्हा ने हाथोंहाथ तुरन्त सहमति जताते हुये आगामी छह माह में उक्त सेवायें प्रारम्भ करने की घोषणा की।

हवाई अड्‌डे पर सांसद जोशी ने कहा कि एयरपोर्ट हेतु डी.जी.सी.ए. तथा भारत सरकार के मानकों के अनुरूप एविएशन सेफ्टी को सुनिश्चित करने के लिये 300 मीटर रनवे बेसिक स्ट्रीप के निर्माण तथा एयरपोर्ट के विस्तार के लिए 145 एकड़ अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता हेतु विस्तृत प्रस्ताव अग्रेसित किया जा चुका है जिसकी अपेक्षित क्रियान्विति के साथ निस्तारण करवाया जाय।

जोशी ने उदयपुर से अहमदाबाद, इंदौर सहित चेन्नई जैसे दक्षिण भारतीय स्थानों के लिए सीधी विमान सेवा प्रारम्भ करने की मांग की ताकि मेवाड़वासियों को अधिकाधिक लाभ मिल सके।

नवजात को मिला जीवनदान

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्‌यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने नवजात का निशुल्क ऑपरेशन कर उसे नया जीवन दिया है।

पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि नागौर जिले के कुचेरा गांव निवासी नवजात मनोज का जन्म सरकारी अस्पताल में हुआ। वहां बच्चे की हालत नाजुक होने पर उसे आगे रेफर कर दिया। इस पर बच्चे के परिजन उसे एक निजी नर्सिंग होम ले गए। वहां पता चला कि बच्चे की सांस व खाने की नली आपस में जुड़ी हुई है जिसका ऑपरेशन द्वारा ही उपचार संभव है। लेकिन आर्थिक तंगी के चलते बच्चे के परिजन ऑपरेशन का खर्च वहन करने में असमर्थ थे। तभी उन्हें किसी ने पेसिफिक इंस्टीट्‌यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा के बारे में बताया। इस पर परिजन नवजात को लेकर पीआईएमएस पहुंचे। यहां बच्चे की नाजुक हालत देखते हुए पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर के साथ डॉ. सुरेश शर्मा, डॉ. रूचि टांटिया की टीम ने तुरन्त ऑपरेशन किया। बच्चे के परिजनों ने बताया कि अस्पताल आते ही डॉक्टरों ने फटाफट बच्चे का इलाज प्रारंभ कर दिया। कई तरह की जांचें कीं और उसके बाद तत्काल उसका ऑपरेशन किया गया। अस्पताल में लाने के बाद सारी जांचें, दवाइयां तथा ऑपरेशन का खर्चा अस्पताल वालों ने ही वहन किया। उनके लिए यह अस्पताल और डॉक्टर ईश्वरतुल्य साबित हुए जिन्होंने मौत के मुंह में जाते हुए बच्चे को स्वस्थ कर हमें अपार खुशी दी। अब हम सब अपने घर पर बच्चे के साथ हैं। बच्चा अब पूरी तरह से स्वस्थ है।

350 विजेताओं ने जीते उपहार

उदयपुर। वोडाफोन ने लगातार दूसरे साल मोबाइल उपयोगकर्ताओं के लिए अनूठी पहल 'रंगबोला तम्बोला' में आयोजित की। इसके तहत उपभोक्ताओं ने वोडाफोन स्टोर्स पर तम्बोला खेला, जिसमें उनका मोबाइल नम्बर ही तम्बोला टिकट था। करीब 3000 मोबाइल उपयोगकर्ता ने तम्बोला खेला।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिज़नेस हैड अमित बेदी ने कहा कि 'रंगबोला तम्बोला' खेलने के लिए वोडाफोन स्टोर्स में आए लोगों को स्टोर के कर्मचारियों ने खेल के नियम समझाए। उपभोक्ता के मोबाइल नम्बर का इस्तेमाल वोडाफोन 'रंगबोला तम्बोला' के तम्बोला टिकट के रूप में किया गया। तम्बोला के इस आकर्षक खेल में 350 विजेताओं को वोडाफोन की ओर से आकर्षक उपहार प्रदान किये गये। अमित बेदी ने कहा कि हमें खुशी है कि वोडाफोन 'रंगबोला तम्बोला' को शानदार प्रतिक्रिया मिली है।

परंपरागत काष्ठशिल्पी मांगीलाल मिस्त्री द्वारा निर्मित गणेशजी, ईसरजी, गणगौर, कार्तिकेय तथा नंदकेसर की प्रतिमाएं। मनौती पूरी होने पर इन पांचों काष्ठ प्रतिमाओं की पूजा एवं आराधना की जाती है।

उदयपुर में 17वें सुपर मार्केट का उद्‌घाटन

उदयपुर। सहकारिता एवं गोपालन मंत्री अजयसिंह कीलक ने शनिवार को सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार के 17वें सुपरमार्केट का हाथीपोल स्थित मॉल में उद्‌घाटन किया। इस दौरान गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया भी मौजूद थे। किसी शॉपिंग मॉल में यह पहला सहकारी सुपरमार्केट है जहां पर दैनिक उपभोग की वस्तुएं उपलब्ध हो सकेंगी।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री कीलक ने कहा कि सहकारिता विभाग नवाचारों में अग्रणी रहते हुए नए आयामों को छू रहा है तथा आमजन को उचित मूल्य पर आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध करवाने का कार्य कर रहा है। सरकार की मंशा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी सुपरमार्केट खोलकर आमजनता को यही सेवाएं मुहैया करवाई जाए। उन्होंने कहा कि श्रीगंगानगर जिले में कई गांवों में सुपरमार्केट खोल दिए गए हैं। सीमा पर बीएसएफ की तीन बटालियन के जवानों को शुद्ध पेयजल भी विभाग से जुड़ी ग्राम सहकारी समितियों द्वारा किया जा रहा है। सहकारिता को आज की आवश्यकता बताते हुए उन्होंने कहा कि एक सबके लिए और सब एक के लिए का सिद्धांत ही सहकारी आंदोलन का ध्येय वाक्य है जिस पर खरा उतरने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री कटारिया ने कहा कि सहकारिता के माध्यम से ही किसानों के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है। अच्छी सेवा एवं पूर्ण गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए उचित मुनाफे का व्यापार करके यह कार्य आसानी से संभव है। सहकारी समितियों के अतिरिक्त रजिस्ट्रार राजेन्द्र भट्ट ने उदयपुर में सहकारी आंदोलन की गतिविधियों की जानकारी दी। भंडार के महाप्रबंधक आशुतोष भट्ट ने सुपर मार्केट से क्रय करने तथा भुगतान कैशलेस करने पर आधा प्रतिशत छूट अतिरिक्त देने की घोषणा की। समारोह में महिला समृद्धि अरबन कॉ ऑपरेटिव बैंक की अध्यक्ष किरण जैन को सहकारी बैंकिंग क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया गया। उनके नेतृत्व में बैंक ने एटीएम, ऑनलाइन बैंकिंग जैसे नई तकनीक का उपयोग करते हुए महिलाओं को बैंकिंग से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस दौरान क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती शोभा को भी सम्मानित किया गया। समारोह में ग्रामीण विधायक फूलचंद मीणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, मेयर चंद्रसिंह कोठारी, यूआईटी अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, भंडार के पूर्व अध्यक्ष प्रमोद सामर, जिला सहकार संघ अध्यक्ष डायालाल लबाना, भूमि विकास बैंक अध्यक्ष रेवाशंकर गायरी, दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ अध्यक्ष गीता पटेल सहित अन्य पदाधिकारी एवं अधिकारी उपस्थित थे।

उंगलियों से दर्द का सम्बंध

अंगूठा- यह हमारे फेफड़े से जुड़ा होता है। अगर आपके दिल की धड़कन तेज है तो हल्के हाथ से अंगूठे पर मसाज करें और हल्का-सा खीचें। **तर्जनी**- यह उंगुली आंतों से जुड़ी होती है। अगर आपके पेट में दर्द है, तो इस उंगली को हल्का सा रगड़ें, दर्द गायब हो जायेगा। **बीच की उंगली**- यह उंगली परिसंचरण तंत्र से जुड़ी होती है। अगर आपको चक्कर आ रहे हैं या जी घबरा रहा है, तो इस उंगली पर मालिश करने से तुरन्त राहत मिलेगी। **तीसरी उंगली**- यह उंगली आपकी मनोदशा से जुड़ी होती है। अगर आपकी किसी कारण मनोदशा अच्छी नहीं है या शान्ति चाहते हों, तो इस उंगली को हल्का-सा मसाज करें और खींचें। **छोटी उंगली**- इस उंगली का किडनी और सिर के साथ सम्बंध होता है। अगर आपको सिर में दर्द है, तो इस उंगली को हल्का सा दबायें और मसाज करें। आपका सिर दर्द गायब हो जायेगा। इस मसाज से किडनी भी तंदुरुस्त रहती है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।